तरुण छत्तीसगढ़

सुनालिया ज्वेलर्स
हीरा, स्वर्ण, हॉलमार्क ज्वेलरी, रजत, राशि नग के विक्रेता
मो. 94255-32524,94241-43922
पावर हाउस रोड, कोरबा

e-Paper- tarunchhattisgarhkorba.com
कोरबा एवं रायपुर से एक साथ प्रकाशित डाक पंजीयन क्रमांक- जी2-112/सी.जी/बीएलपी/003/2024-2026
वर्ष 37 अंक 18 | कोरबा, शुक्रवार, दिनांक 17 अक्टूबर 2025 डाक 18 अक्टूबर 2025 | पृष्ठ : 8 मूल्य 2.00 रुपए

विविधा
आंध्र प्रदेश के श्रीशैलम में आगमन पर भव्य रोड शो के दौरान उत्साही भीड़ द्वारा प्रधानमंत्री का गर्मजोशी से स्वागत किया गया

देश-विदेश
ट्रंप को बड़ा झटका, अमेरिका में संघीय कर्मचारियों की बर्खास्तगी पर कोर्ट ने लगाई रोक

कोरिया पेज
अंशिका कश्यप विज्ञान प्रतियोगिता में करेंगी राष्ट्रीय मंच पर प्रतिनिधित्व,मॉडल को मिली सराहना

बंद दरवाजों के पीछे क्या हुई बात? अमित शाह की नीतीश से मुलाकात पर उठे सियासी सवाल

पटना, 17 अक्टूबर [एजेंसी]।

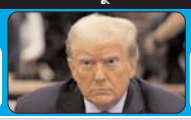

बिहार की राजनीति में एक बार फिर हलचल तेज हो गई है। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह शुक्रवार को अचानक मुख्यमंत्री नीतीश कुमार से मुलाकात करने उनके सरकारी आवास 1 अणे मार्ग पहुंचे। इस मुलाकात को लेकर सियासी गलियारों में चर्चाओं का दौर तेज हो गया है। हालांकि इस भेंट को लेकर आधिकारिक तौर पर कोई बयान सामने नहीं आया है, लेकिन इसे आगामी लोकसभा चुनाव और राज्य की राजनीतिक स्थिति से जोड़कर देखा जा रहा है। अमित शाह और नीतीश कुमार की यह मुलाकात ऐसे समय में हुई है जब राज्य में सियासी समीकरण तेजी से बदल रहे हैं। सूत्रों के अनुसार, दोनों नेताओं के बीच लगभग 45 मिनट तक बातचीत हुई, जिसमें गठबंधन, चुनावी रणनीति और विकास योजनाओं पर चर्चा होने की संभावना जताई जा रही है।

भाजपा और जदयू के बीच पिछले कुछ समय से संबंधों में उतार-चढ़ाव देखने को मिला है। ऐसे में अमित शाह की यह मुलाकात कई संभावनाओं के संकेत दे रही है।

असम के तिनसुकिया में आर्मी कैंप पर आतंकी हमला, तीन जवान घायल

असम, 17 अक्टूबर [एजेंसी]।

असम के तिनसुकिया जिले के काकोपाथर क्षेत्र में आज सुबह आर्मी कैंप पर आतंकवादियों ने हमला कर दिया। इस हमले में सेना के तीन जवान घायल हो गए। इस घटना को लेकर सेना के एक अधिकारी ने बताया कि सेना और पुलिस ने आतंकवादियों को पकड़ने के लिए इलाके में सर्चऑपरेशन शुरू किया है। रात 12.30 बजे के करीब कुछ आतंकवादियों ने चलती गाड़ी से काकोपाथर कंपनी की जगह पर फायरिंग की। ड्यूटी पर मौजूद सैनिकों ने तुरंत जवाबी कार्रवाई की। हालांकि, आसपास के घरों को नुकसान से बचाने के लिए सावधानी भी बरती गई। सेना के एक अधिकारी ने बताया कि जवाबी कार्रवाई के बाद आतंकवादी ऑटोमैटिक हथियारों से जानबूझकर फायरिंग करने के बाद मौके से भाग गए। बताया गया कि इस हमले में तीन जवानों को मामूली चोटें आई हैं। इलाके में पुलिस के साथ मिलकर सर्चऑपरेशन चलाया जा रहा है। यह इलाका असम और अरुणाचल प्रदेश के बीच इंटरस्टेटबॉर्डर के पास है।

लाल आतंक का सबसे बड़ा सरेंडर!

पहली बार 200 से ज्यादा नक्सलियों ने एक साथ किया सरेंडर

रायपुर 17 अक्टूबर। नक्सलवाद का अंत अब बेहद नजदीक दिख रहा है। ताबड़तोड़ एनकाउंटर से खौफ में आए नक्सली 'लाल आतंक' को छोड़कर अब लाल गुलाब और संविधान की कॉपी हाथ में लेकर अहिंसा की कसमें खा रहे हैं। छत्तीसगढ़ में शुक्रवार को 208 नक्सलियों ने एक साथ हथियार छोड़ मुख्यधारा में प्रवेश किया। मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय ने कहा कि यह देश का सबसे बड़ा नक्सल सरेंडर है।

माउंट एवरेस्ट पर चढ़ने वाली पहली टीम के अंतिम जीवित सदस्य का निधन

काठमांडू। 1953 में माउंट एवरेस्ट की पहली सफल चढ़ाई के अंतिम जीवित सदस्य, कांचा शेरपा का 89 वर्ष की आयु में निधन हो गया। नेपाल पर्वतारोहण संघ के अध्यक्ष फुर गेलजे शेरपा ने बताया कि शेरपा, जो काफी समय से अस्वस्थ थे, तड़के काठमांडू के कपन स्थित अपने घर पर निधन हो गया। उन्होंने आईएएनएस को बताया, उनके निधन के साथ, पर्वतारोहियों की उस महान टीम का कोई भी जीवित सदस्य नहीं बचा है, जो पूरे पर्वतारोहण समुदाय के लिए एक बड़ी क्षति है। शेरपा परंपरा के अनुसार उनका अंतिम संस्कार 20 अक्टूबर को किया जाएगा। शेरपा के परिवार में दो बेटे, दो बेटियाँ और उनके बच्चे हैं। वह उस 35 सदस्यीय दल में शामिल थे जिसने 29 मई, 1953 को सर एडमंड हिलेरी और तेनजिंग नोर्गे को 8,848.86 मीटर ऊँची इस चोटी पर पहुँचाया था।

2.29 करोड़ की सोने की डकैती का पर्दाफाश कंपनी कर्मचारी सहित चार गिरफ्तार

मुंबई 17 अक्टूबर। मुंबई पुलिस ने एक दिनदहाड़े डकैती के मामले को सुलझाते हुए 2.29 करोड़ रुपए के सोने के आभूषण बरामद किए हैं। यह डकैती सेवरी इलाके में हुई थी, जिसे एक ज्वैलरी कंपनी के कर्मचारी और उसके राजस्थान के रिश्तेदारों ने मिलकर अंजाम दिया था। पुलिस ने चार आरोपियों को गिरफ्तार कर लिया है और चोरी का पूरा माल बरामद कर लिया है।

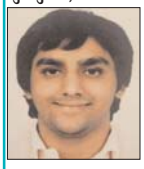

पंजाब के पूर्व डीजीपी के बेटे की अचानक, जांच में जुटी पुलिस, दवा का ओवरडोज बताया जा रहा कारण

चंडीगढ़ 17 अक्टूबर। पंजाब के पूर्व पुलिस महानिदेशक मोहम्मद मुस्तफा और कांग्रेस पार्टी की सरकार में कैबिनेट मंत्री रहीं रजिया सुल्तान के बेटे अकील अख्तर का अचानक निधन हो गया। उनका निधन उनके निवास स्थल पर ही हुआ। उन्हें खाक-ए-सुपुर्द यूपी के सहारनपुर में उनके पैतृक गांव हरदा खेड़ी में किया जाएगा। अकील का अचानक देहांत कैसे हुआ, इस पर फिलहाल कोई आधिकारिक जानकारी नहीं है। लेकिन ऐसा कहा जा रहा है कि ड्रग्स के ओवरडोज से उसकी मौत हुई। अकील का पोस्टमार्टम कर शव परिजनों को सौंप दिया गया है। पुलिस का कहना है की रिपोर्ट आने के बाद ही मौत के कारण स्पष्ट होंगे। अनऑफिशियल तौर पर पुलिस का कहना है कि यह मामला ओवरडोज का है। सुसाइड नोट की कोई बात अब तक सामने नहीं आई है या किसी तरह वीडियो की कोई बात सामने नहीं आई है।

रायबरेली में हरिओम के परिजनों से मिले राहुल गांधी गले लगाया, बोले- दलितों पर अत्याचार बढ़ रहा

कानपुर। कांग्रेस के वरिष्ठ नेता और सांसद राहुल गांधी शुक्रवार सुबह चकेरी एयरपोर्ट पहुंचे। यहां से फतेहपुर में हरिओम वाल्मीकि के परिजनों से मिलने के लिए पहुंचे। रायबरेली के ऊंचाहार में भीड़ का शिकार हुए हरिओम वाल्मीकि के परिवार ने कांग्रेस नेता राहुल गांधी से मिलने से इनकार कर दिया। इस पर पुलिस ने राहुल गांधी का काफिला रोक लिया था। हालांकि बाद में परिवार ने मिलने के लिए हामी भरी। उसके बाद प्रशासन ने राहुल गांधी को मुलाकात की अनुमति दी। राहुल गांधी ने परिवार से काफी देर तक बातचीत की। कांग्रेस सांसद राहुल गांधी ने दो अक्तूबर को रायबरेली में कथित तौर पर पीट-पीटकर हत्या किए गए दलित युवक हरिओम वाल्मीकि के परिवार से मुलाकात पर कहा, कुछ दिन पहले दलित अफसर ने आत्महत्या की थी। मैं वहां गया और आज मैं यहां आया हूं। अपराध इस परिवार ने नहीं किया, अपराध इनके खिलाफ किया गया है और लग ऐसा रहा है कि यह लोग अपराधी हैं। इन्हें घर में बंद कर रखा है, इन्हें डराया जा रहा है। ये लोग केवल न्याय मांग रहे हैं। हमारे बेटे, हमारे भाई को मारा गया है। उसकी हत्या की गई है। हम केवल न्याय मांग रहे हैं। पूरे देश में दलितों के खिलाफ अत्याचार, हत्याएं, दुष्कर्म जैसी घटनाएं हो रही हैं। मैं मुख्यमंत्री से कहना चाहता हूं, इन्हें न्याय दीजिए, इनका सम्मान कीजिए। जो अपराधी हैं उनके खिलाफ जल्द से जल्द कार्रवाई कीजिए और उनकी रक्षा करने का प्रयास मत कीजिए...(पीड़ित परिवार) मुझ से मिलें, मुझ से ना मिलें यह जरूरी नहीं है, बल्कि जरूरी बात यह है कि ये लोग अपराधी नहीं हैं। इन्होंने कोई गलती नहीं की है... अपराधी दूसरे लोग हैं और उनके खिलाफ कार्रवाई होनी चाहिए। मैंने आज यहां आकर इनसे बातचीत की, इनका दर्द और दुख सुना और कांग्रेस पार्टी और मेरा प्रयास है कि हम जो मदद कर सकते हैं हम करेंगे। लोकसभा नेता राहुल गांधी ने कहा कि आज सुबह सरकार ने परिवार को मुझसे न मिलने की धमकी दी, यह महत्वपूर्ण नहीं है कि पीड़ित परिवार मुझसे मिलता है या नहीं, लेकिन महत्वपूर्ण यह है कि ये लोग अपराधी नहीं हैं।

दर्दनाक हादसा: उत्तराखंड से मरीज लेकर बनारस जा रही निजी एम्बुलेंस पलटी, चार की मौत

सीतापुर 17 अक्टूबर। सीतापुर जिले के अटरिया के हिंद अस्पताल के पास शुक्रवार सुबह एक निजी एम्बुलेंस अनियंत्रित होकर पलट गई। इस हादसे में कुल चार लोगों की मौत हो गई। थानाध्यक्ष उमाकांत शुक्ला ने बताया कि एम्बुलेंस मरीज लेकर देहरादून से बनारस जा रही थी। स्थानीय लोगों ने बताया कि एक निजी एम्बुलेंस मरीज को इलाज के लिए बनारस लेकर जा रही थी। हिन्द अस्पताल के पास नेशनल हाईवे पर अनियंत्रित होकर पलट गई।हादसे में सड़क किनारे खड़ी अज्ञात 40वर्षीय महिला की मौत हो गई। वहीं, महिला के साथ रोड किनारे खड़ी बच्ची की हालत गंभीर बनी हुई है। बच्ची का इलाज हिंद अस्पताल में चल रहा है। हादसे में एम्बुलेंस सवार तीन लोगों व सड़क किनारे खड़ी एक अज्ञात महिला की मौत हुई है। मृतकों में एम्बुलेंस चालक गुरमीत (40) , एम्बुलेंस सवार मरीज विशाल पांडेय (48), व एक अन्य शामिल हैं।

जम्मू के उधमपुर में सुरक्षाबलों का सर्च अभियान

जम्मू। जम्मू-कश्मीर के उधमपुर जिले के लट्टी इलाके में सुरक्षाबलों की एक संयुक्त टीम ने गुरुवार घेराबंदी कर तलाशी अभियान शुरू किया। सुरक्षाबलों कोस्थानीय लोगों ने बताया कि संदिग्ध आतंकवादियों का एक समूह किरची गांव के एक घर में घुस गया है। इन्होंने निवासियों को धमकाया है और कथित तौर पर नकदी छीनने के बाद भाग गए।

डीआईजी भुल्लर और बिचौलिए की कॉल रिकॉर्डिंग में बड़े खुलासे, घर में मिला था 5 करोड़ कैश

चंडीगढ़ 17 अक्टूबर। सीबीआई ने रोपड़ रेंज के डीआईजी हरचरण सिंह भुल्लर को रिश्वत से जुड़े एक मामले में अरेस्ट किया है। आरोप है कि उन्होंने दो साल पुराने केस में स्क्रैप कारोबारी को राहत देने की एवज में आठ लाख रुपये की रिश्वत ली और हर महीने रिश्वत भी मांगी। सीबीआई के मुताबिक, डीआईजी फतेहगढ़ साहिब जिले के मंडी गोबिंदगढ़ निवासी आकाश बत्ता को धमकाकर रिश्वत मांग रहे थे। सीबीआई टीम ने डीआईजी के चंडीगढ़ सेक्टर-40 स्थित घर से पांच करोड़ कैश, डेढ़ किलो सोने के गहने, कई प्रॉपर्टी के कागजात, मर्सिडीज व ऑडी गाड़ी और 22 महंगी घड़ियां भी जब्त की हैं। कैश तीन बैग व एक अटैची में भरा था। इसे गिनने के लिए मशीनें मंगवानी पड़ीं। रिश्वत को सेवा-पानी कह रहे डीआईजी की कॉल रिकॉर्डिंग भी सीबीआई के हाथ लगी है। इसी आधार पर वीरवार को पूछताछ के लिए भुल्लर को सीबीआई ने दोपहर में कार्यालय बुलाया और गिरफ्तार कर लिया। काल रिकॉर्डिंग में डीआईजी बिचौलिए को कहते हैं कि अट्ठ फड़ने ने अट्ठ। जिन्ने देंदा, नाल-नाल फड़ी चल, ओहनूं कह दे अट्ठ कर दे पूरा। रिकॉर्डिंग में मंथली मांगे जाने की भी बात है। एक रिकॉर्डिंग में बिचौलिया आकाश से कहता है कि अगस्त दा नहीं आया, सितंबर दा नहीं आया। दो साल पहले सरहिंद पुलिस थाने में आकाश के विरुद्ध आपराधिक केस दर्ज हुआ था। डीआईजी उसी केस में राहत देने के नाम पर आठ लाख रिश्वत और हर महीने पैसे देने की मांग कर रहे थे। इसी से तंग आकर आकाश ने 11 अक्टूबर को सीबीआई को शिकायत दे दी।

दिल्ली के वसंत कुंज में तेज रफ्तार THAR का कहर

टक्कर से 13 साल के बच्चे की मौत

नई दिल्ली 17 अक्टूबर। दिल्ली में एक दर्दनाक घटना सामने आई है। पीसीआर कॉल के अनुसार, पीएस वीके नार्थ में इंडियन ऑयल पेट्रोल पंप C-8, वसंत कुंज के पास एक हादसे की सूचना मिली। सूचना में बताया गया कि एक काले रंग की थार ने कथित तौर पर एक बच्चे को टक्कर मार दी है। मौके पर पहुंची पुलिस को बच्चा बेहोश मिला। बताया गया कि आईओ पूरी टीम के साथ मौके पर पहुंचे थे, उन्होंने बच्चे को बेहोशी की हालत में पीसीआर वैन से अस्पताल में भर्ती कराया, जहां डॉक्टरों ने उसे मृत घोषित कर दिया। पुलिस को घटनास्थल से खून के निशान और टूटी हुई साइकिल मिली थी, जिसके आधार पर जांच शुरू कर दी गई है।

25.98 करोड़ से जिले के तीन क्षेत्रों की सड़क का होगा सुधार

कोरबा । अनुविभागीय अधिकारी लोक निर्माण विभाग संभाग कोरबा ने रिस्दी चौक मार्ग से बालको की सड़क की समस्या के सम्बंध में बताया कि मेजर ध्यानचंद चौक से बालको होते हुए रिस्दी चौक मार्ग की कुल लंबाई 9 किलोमीटर है, जो कि बजट वर्ष 2024-25 एवं 2025-26 में शामिल था। जिसके अंतर्गत ध्यानचंद चौक से बजरंग चौक की प्रशासकीय स्वीकृति कार्यालय जिला खनिज न्यास कोरबा द्वारा आदेश दिनांक 17 मई 2025 एवं तकनीकी स्वीकृति मेजर ध्यानचंद चौक से बजरंग चौक एवं रिस्दी रिस्दी चौक तक राशि 2598.47 लाख लंबाई 5.74 कि.मी. दिनांक 09 सितम्बर 2025 को प्राप्त हुआ । रिस्दी चौक मार्ग के चैनेज 8730 में हैं

छत्तीसगढ़ शासन द्वारा दिनांक 06 जून 2025 को उक्त मार्ग में कार्य संपादित कराए जाने की अनुमति प्राप्त हुयी है एवं वर्तमान में कार्य की निविदा प्रक्रियाधीन हैं, निविदा उपरांत कार्यादेश होते ही मार्ग का निर्माण कार्य प्रारंभ किया जायेगा। उन्होंने रिस्दी चौक में जल जमाव व पानी निकासी की समस्या के बारे में जानकारी दी है कि निर्माण कार्य के प्राक्कलन में पानी निकासी हेतु एवं जलजमाव के निराकरण हेतु उचित प्रावधान लिया गया है। स्वीकृत प्राक्कलन में विद्युत/यांत्रिकी लोक निर्माण विभाग द्वारा स्ट्रीट लाईट प्रावधानित हैं। मार्ग में बालको प्लांट से भारी वाहनों का आवागमन होता हैं एवं मार्ग की क्षमता से अधिक दबाव होने के कारण मार्ग क्षतिग्रस्त होता हैं। इस हेतु नवीन स्वीकृत मार्ग मेजर ध्यानचंद चौक से बालको होते हुए रिस्दी चौक सी.सी. 2 लेन मार्ग निर्माण हो जाने से यातायात सुगम होगा, साथ ही जक्शंन सुधार एवं जल निकासी का समाधान भी हो जायेगा। बालको प्रबंधन द्वारा 10 अक्टूबर 2025 से उक्त मार्ग में मरम्मत कार्य प्रारंभ किया गया है।

महंत दंपत्ति ने जताई संवेदना

कोरबा । छत्तीसगढ़ विधानसभा के नेता प्रतिपक्ष डॉ. चरणदास महंत व कोरबा लोकसभा क्षेत्र की सांसद श्रीमती ज्योत्सना महंत ने छग विधानसभा के प्रथम उपाध्यक्ष बनवारीलाल अग्रवाल के निधन पर दुःख व्यक्त करते हुए अपनी गहरी संवेदना जताते हुए परिजनों को इस दुःख को सहने की शक्ति प्रदान करने ईश्वर से प्रार्थना की है।

डॉ. महंत ने कहा कि बनवारीलाल अग्रवाल एक बेहतर वक्ता के साथ-साथ लोकप्रिय जनप्रतिनिधि रहे है। वे मेरे साथ मध्यप्रदेश की विधानसभा में सदस्य भी रहे है। विधानसभा में जनहित के मुद्दों को प्रमुखता से रखने में उनकी अग्रणी भूमिका रही है।

जिले में 10 दिसम्बर 2025 को स्थानीय अवकाश घोषित

कोरबा । कलेक्टर श्री अजीत वसंत ने जिले में 10 दिसम्बर 2025 शहीद वीर नारायण सिंह के बलिदान दिवस को स्थानीय अवकाश घोषित किया है। गौरतलब है कि पूर्व में जिले में 21 अक्टूबर 2025 गोवर्धन पूजा दिन मंगलवार को स्थानीय अवकाश घोषित किया गया था। छत्तीसगढ़ सामान्य प्रशासन विभाग द्वारा 21 अक्टूबर 2025 गोवर्धन पूजा के अवसर पर सम्पूर्ण छत्तीसगढ़ में सार्वजनिक अवकाश घोषित किया गया है । इस हेतु कलेक्टर द्वारा अब जिले में 21 अक्टूबर गोवर्धन पूजा के स्थानीय अवकाश को निरस्त करते हुए शहीद वीर नारायण सिंह बलिदान दिवस 10 दिसम्बर 2025 दिन बुधवार को जिला कोरबा हेतु स्थानीय अवकाश घोषित किया गया है।

आदर्श आदिवासी कोसा कृमि पालन सहकारी समिति के सदस्यता सूची का 25 अक्टूबर को होगा अंतिम प्रकाशन

कोरबा । आदर्श आदिवासी कोसा कृमि पालन उद्योग सहकारी समिति मर्यादित कुदरीखार पंजीयन क्रमांक 01 का सदस्यता सूची का प्रकाशन कार्यक्रम जारी किया गया है । जिसमें आगामी 17 अक्टूबर को सूचना पत्र जारी किया जाएगा। सदस्यता सूची का प्रथम प्रकाशन 18 अक्टूबर को किया जाएगा । इसी प्रकार 19 से 25 अक्टूबर तक आपत्ति प्राप्त करने एवं निराकरण हेतु तिथि निर्धारित है एवं सदस्यता सूची का अंतिम प्रकाशन 25 अक्टूबर को किया जाएगा।

बाल संप्रेक्षण गृह के कर्मचारियों को संस्था के अंदर व बाहरी परिसर पर ध्यान रखने किया गया निर्देशित

कोरबा । अधीक्षक शासकीय बाल संप्रेक्षण गृह (बालक) ने बाल सम्प्रेक्षण गृह (बालक) में शराब की बोतलें और आपत्तिजनक समान मिलने के सम्बंध में बताया कि जिला बाल संरक्षण ईकाई के अधिकारीयों व कर्मचारियों को रात्रिकालिन ड्यूटी संप्रेक्षण गृह में बालको के देखरेख व निगरानी व्यवस्थापन हेतु लगाई गई थी। रोस्टर ड्यूटी के अनुसार राजीव राज, अशोक राजवाड़े और गणेश जायसवाल उपस्थित हुए। बाल सम्प्रेक्षण गृह में रात्रिकालिन ड्यूटी वाले कर्मचारी पूरनचंद विश्वाल (हाउस फादर) व सुरेश पैकरा (नगर सैनिक) उपस्थित थे।
उन्होंने बताया कि बाल सम्प्रेक्षण गृह का परिसर बहुत बड़ा और खुला हुआ है एवं बाहर में कोई गार्ड की व्यवस्था नही है, साथ ही परिसर में अन्य गृह पर कार्य चल रहा है जिसके कारण बाहरी व्यक्तियों का आना जाना लगा रहता है। सार्वाजनिक शौचालय पीछे की तरफ है जिसके कारण किसी भी अज्ञात व्यक्ति के द्वारा शराब की खाली बोतल परिसर में रखा गया होगा। उन्होंने बताया कि ड्यूटी के दौरान संस्था के कोई भी कर्मचारी नशे की हालत में नही थे। उक्त घटना के संबंध में कार्यवाही करते हुए कर्मचारियों को नोटिस जारी कर अंतिम चेतावनी भी दिया गया है एवं समस्त कर्मचारियों को संस्था परिसर के अंदर के साथ ही साथ बाहरी परिसर का भी ध्यान रखने निर्देशित किया गया है।

कलेक्टर अजीत वसंत ने सभी विभागों में बायोमेट्रिक उपस्थिति प्रणाली लागू करने के दिए निर्देश

कोरबा। कलेक्टर श्री अजीत वसंत ने जिले के सभी शासकीय विभागों में कर्मचारियों की समय पर उपस्थिति सुनिश्चित करने के लिए बायोमेट्रिक अटेंडेंस सिस्टम अनिवार्य रूप से लागू करने के निर्देश दिए हैं। उन्होंने कहा कि कार्यालयीन अनुशासन और कार्यकुशलता बढ़ाने के लिए प्रत्येक अधिकारी-कर्मचारी का समय पर उपस्थित रहना आवश्यक है।कलेक्टर ने विभाग प्रमुखों को स्पष्ट निर्देश दिए कि सभी कार्यालयों में बायोमेट्रिक मशीनें सुचारू रूप से संचालित रहें और प्रतिदिन कर्मचारियों की उपस्थिति दर्ज की जाए। किसी भी स्तर पर लापरवाही पाए जाने पर जिम्मेदार अधिकारी के विरुद्ध कार्रवाई की जाएगी। उन्होंने यह भी कहा कि समयपालन शासन की प्राथमिकता है, इसलिए बायोमेट्रिक प्रणाली के माध्यम से पारदर्शिता और जवाबदेही सुनिश्चित की जाएगी। कलेक्टर ने सभी विभागों को इस व्यवस्था को पूर्ण रूप से लागू करने के निर्देश दिए हैं।

छत से झरती रोशनी केवल घरों को नहीं, बल्कि भारत के भविष्य को कर रही प्रकाशित

सूर्यघर योजना से पर्यावरण संरक्षण की गारंटी और आत्मनिर्भर भारत का सपना हो रहा साकार

कोरबा । जब भारत आत्मनिर्भरता के मार्ग पर दृढ़ता से आगे बढ़ रहा है, तब ऊर्जा क्षेत्र में क्रांति का नाम बन चुकी प्रधानमंत्री सूर्यघर मुफ्त बिजली योजना ने देश के हर घर को नई दिशा और नई पहचान दी है। पहले जहाँ सूरज केवल प्रकाश का स्रोत माना जाता था, आज वही सूरज लोगों की जीवनशैली, अर्थव्यवस्था और पर्यावरण चेतना का हिस्सा बन गया है। योजना ने साबित कर दिया है कि ऊर्जा की असली शक्ति केवल बड़ी परियोजनाओं में नहीं, बल्कि हर नागरिक की छत पर बसने वाले सूर्यघर में छिपी है। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में शुरू की गई इस योजना का उद्देश्य देश के हर घर को ऊर्जा आत्मनिर्भर बनाना है। केंद्र सरकार द्वारा दी जाने वाली सब्सिडी, पारदर्शी आवेदन प्रक्रिया और सरल तकनीकी व्यवस्था ने इसे आम नागरिकों के लिए सहज बना दिया है। यह योजना केवल बिजली बचत तक सीमित नहीं है, बल्कि स्वच्छ ऊर्जा के उपयोग और पर्यावरण संरक्षण की दिशा में भी एक सशक्त अभियान है। इससे हर साल हजारों टन कार्बन उत्सर्जन में कमी हो रही है, जो जलवायु परिवर्तन के खतरे को कम करने में योगदान दे रही है। सरकार का लक्ष्य है कि आने वाले वर्षों में देश के करोड़ों परिवार इस योजना से जुड़कर न केवल आत्मनिर्भर बनें, बल्कि हरित भारत के निर्माण में सक्रिय भागीदारी निभाएँ।
राज्य ने इस योजना को जनआंदोलन का रूप दे दिया है। मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय के मार्गदर्शन में राज्य के सभी जिलों में इस योजना के माध्यम से मिली है। परिणामस्वरूप आज कोरबा जिले के शहरी और ग्रामीण दोनों क्षेत्रों में लोग इस योजना से जुड़ रहे हैं और अपने घरों को सौर ऊर्जा के घर में बदल रहे हैं। जिले के दो नागरिक श्री शंकर पुरी और श्री टेकराम मरावी इस अभियान की सफलता के सजीव उदाहरण हैं। दोनों ने ही प्रधानमंत्री सूर्यघर मुफ्त बिजली योजना का लाभ लेकर न केवल अपने बिजली बिल को शून्य किया है, बल्कि अपने घरों को पर्यावरण के प्रति जिम्मेदार और आत्मनिर्भर बना दिया है।
कोरबा जिले के हाउसिंग बोर्ड कॉलोनी, दादर खुर्द में रहने वाले श्री शंकर पुरी बताते हैं कि पहले हर महीने बिजली का बिल आता था, बढ़ते खर्च के कारण परिवार के बजट पर असर पड़ता था। लेकिन जब उन्हें प्रधानमंत्री सूर्यघर योजना की जानकारी मिली, तो उन्होंने बिना देर किए इस योजना में शामिल होने का निर्णय लिया। योजना की सरल प्रक्रिया और पारदर्शिता ने उन्हें आत्मविश्वास दिया। उन्होंने अपने घर की छत पर का सोलर पैनल लगाया, जिसके लिए उन्हें सरकार की ओर से सब्सिडी भी मिली। अब उनका घर पूरी तरह सौर ऊर्जा से चल रहा है पंखे, लाइटें, फ्रिज और अन्य उपकरण सब सूरज की किरणों से संचालित हैं। वे कहते हैं अब सूरज ही हमारा बिजलीघर है। यह योजना हमारे जीवन में सच्चा बदलाव लेकर आई

है।वहीं श्री टेकराम मरावी, जो सीएसईबी में कार्यरत हैं, ने भी इसी योजना से अपनी छत को ऊर्जा केंद्र बना दिया। वे बताते हैं कि पहले हर महीने बिजली बिल आता था। लेकिन अब उनका घर पूरी तरह सौर ऊर्जा पर निर्भर है। उनका कहना है प्रधानमंत्री सूर्यघर योजना ने हमें आत्मनिर्भर बनाया है। अब हम बिजली के उपभोक्ता नहीं, बल्कि उत्पादक हैं। यह गर्व की बात है कि हमारे घर की छत से ऊर्जा पैदा हो रही है। दोनों लाभार्थियों का अनुभव एक जैसी भावना को दर्शाता है सरकारी योजनाएँ जब सुलभ, पारदर्शी और लाभकारी होती हैं, तब वे केवल सुविधा नहीं, बल्कि आत्मविश्वास देती हैं।प्रधानमंत्री सूर्यघर मुफ्त बिजली योजना केवल एक सरकारी पहल नहीं, बल्कि हर भारतीय की भागीदारी से चलने वाला हरित आंदोलन बन चुकी है। कोरबा जैसे औद्योगिक जिले में, अब हर घर ऊर्जा उत्पादन में सक्षम हो रहा है। यह बदलाव केवल तकनीकी नहीं, बल्कि सामाजिक और आर्थिक परिवर्तन का प्रतीक है। इस योजना के माध्यम से हर लाभार्थी ने यह महसूस किया है कि सूरज केवल रोशनी नहीं देता वह विश्वास, स्थिरता और सुरक्षा भी देता है। बिजली बिल में बचत के साथ-साथ इस योजना ने लोगों में पर्यावरण चेतना और सस्टेनेबल जीवनशैली की समझ बढ़ाई है। अब लोग समझने लगे हैं कि ऊर्जा की असली आज़ादी तभी है, जब हर घर अपनी छत से ऊर्जा उत्पन्न कर सके। आने वाले वर्षों में जब हर घर सूरज की किरणों से रोशन होगा, तब भारत न केवल बिजली में आत्मनिर्भर होगा, बल्कि स्वच्छ, हरित और समृद्ध राष्ट्र के रूप में विश्व मंच पर उदाहरण बनेगा।

नर्सिंग पाठ्यक्रमों में प्रवेश के लिए आवेदन की ऑनलाईन तिथि तीन दिन बढ़ी

अब 17 अक्टूबर शाम पांच बजे तक भरे जा सकेंगे आवेदन

कोरबा । राज्य के नर्सिंग महाविद्यालयों में प्रवेश के लिए ऑनलाईन आवनेदन करने की तिथि तीन दिन बढ़ा दी गई है। विद्यार्थी अब 17 अक्टूबर शाम पांच बजे तक नर्सिंग पाठ्यक्रमों में प्रवेश के लिए ऑनलाईन आवेदन भर सकेंगे। नर्सिंग पाठ्यक्रमों में प्रवेश के लिए काउंसलिंग समिति के अध्यक्ष ने इस बारे में सूचना भी जारी कर दी है। इस वर्ष 2025 में काउंसलिंग के जरिए बी.एस.सी. नर्सिंग, एम.एस.सी. नर्सिंग, पोस्ट बेसिक बी.एस.सी. नर्सिंग, और पोस्ट बेसिक डिप्लोमा इन साईकियाट्रिक नर्सिंग पाठ्यक्रमों में प्रवेश दिया जाएगा। पहले इन पाठ्यक्रमों में प्रवेश के लिए ऑनलाईन आवेदन करने की अंतिम तिथि 14 अक्टूबर थी जिसे बढ़ाकर 17 अक्टूबर कर दिया गया है। काउंसलिंग, आवंटन और प्रवेश संबंधी सभी जानकारियां चिकित्सा शिक्षा संचालनालय की वेबसाईट ूब्बहकउमण्पद पर भी उपलब्ध कराई गई है।
चिकित्सा शिक्षा संचालनालय से प्राप्त जानकारी के अनुसार ऑनलाईन आवेदन के लिए अनारक्षित और अन्य पिछड़ा वर्ग के उम्मीदवारों को 1 हजार रूपए और अनुसूचित जाति-जनजाति के उम्मीदवारों को 500 रूपए शुल्क जमा करना होगा। ऑनलाईन आवेदन में किसी तरह की गलती हो जाने पर त्रुति सुधार के लिए एक हजार रूपए शुल्क निर्धारित किया गया है। त्रुटि सुधार के समय पहले दिए गए ई-मेल एवं मोबाईल नंबर में कोई परिवर्तन नहीं हो सकेगा। ऑनलाईन आवेदन के समय ही अभ्यर्थियों को संस्था का चयन करना होगा। इसके लिए अतिरिक्त समय नहीं दिया जाएगा। ऑनलाईन आवेदन की अंतिम तिथि तक अभ्यर्थियों को सभी आवश्यक दस्तावेज उपलब्ध रखने होंगे। अपूर्ण आवेदन या पंजीयन फीस के बैंक गेटवे से जमा नहीं होने पर अभ्यर्थी अपात्र घोषित किये जा सकेंगे। अतः अभ्यर्थियों को ऑनलाईन आवेदन की अंतिम तिथि से 17 अक्टूबर से 24 घंटे पहले आवेदन भरने की कार्यवाही पूरी कर लेनी चाहिए।
पहली काउंसलिंग में आवंटित अभ्यर्थियों को संवीक्षा कराना एवं पात्र होना जरूरी होगा। शासकीय नर्सिंग महाविद्यालय में प्रवेश लेना अनिवार्य किया गया है। शासकीय नर्सिंग कॉलेज में प्रवेश नहीं लेने पर अभ्यर्थी अपात्र घोषित किये जा सकेंगे। ऑनलाईन आवेदन के बाद आगे की कार्यवाही के लिए काउंसलिंग शेड्यूल का अवलोकन विभागीय वेबसाईट पर किया जा सकता है।

स्वस्थ्य तन, सुरक्षित मन, जिला विधिक सेवा प्राधिकरण और आयुष विभाग के संयुक्त मुहिम ने दिया जन सेवा का नया संदेश

कोरबा । प्रधान जिला एवं सत्र न्यायाधीश/अध्यक्ष जिला विधिक सेवा प्राधिकरण कोरबा श्री संतोष शर्मा के निर्देशानुसार आयुष विभाग के तत्वधान में जिला विधिक सेवा प्राधिकरण के बैनर तले एडीआर भवन में स्वास्थ्य परीक्षण शिविर का आयोजन किया गया। उक्त शिविर में विशेष स्वास्थ्य शिविर के माध्यम से स्वास्थ्य व न्यायिक जागरूकता का अनुठा संगम बी.पी, शुगर, गठियाबात, बवासीर जैसे गंभीर बिमारियों का निःशुल्क परीक्षण व परामर्श आयोजित किया गया। विशेष स्वास्थ्य शिविर ने जिले में जनसेवा की मिशाल कायम की कार्यक्रम में नागरिकों, अधिवक्ताओं, न्यायिक कर्मचारियों ने भाग लेकर स्वास्थ्य जांच करायी और विधिक जागरूकता से जुडी महत्वपूर्ण जानकारियां प्राप्त की।
इस अवसर पर सचिव जिला विधिक सेवा प्राधिकरण कोरबा ने कहा कि न्याय और स्वास्थ्य एक दूसरे के पूरक है जब शरीर स्वस्थ्य होता तभी नागरिक अपने अधिकारों और र्कतव्यों के प्रति सजग रह सकते है। उन्होंने कहा कि

यह पहल केवल स्वास्थ्य परीक्षण नहीं बल्कि समाज को जागरूक एवं आत्मनिर्भर बनाने की दिशा में एक कदम है।उक्त शिविर में बी.पी., शुगर, गठियाबात, बवासीर जैसे गंभीर बिमारियों का परीक्षण किया गया तथा विशेष चिकित्सकों ने उपचार व जीवन शैली सुधार पर मार्गदर्शन दिया।आयुष विभाग के चिकित्सक डॉ0 पवन मिश्रा एवं डॉ सुषमा चौहान की संयुक्त टीम ने प्राकृतिक चिकित्सा योग और औषधीय परामर्श के माध्यम से स्वास्थ्य जीवन शैली अपनाने का संदेश दिया।

राज्य सलाहकार मोनिका सिंह ने विभिन्न ग्रामों का भ्रमण कर योजनाओं की प्रगति जानी

कोरबा। मोनिका सिंह राज्य सलाहकार (रा.स्व.भा.मि.ग्रा.) एवं संभाग प्रभारी (बिलासपुर) के द्वारा कोरबा जिले मे जनपद पंचायत कटघोरा के ग्राम पंचायत ढपढप, शुक्लाखार, पौंसरा, चाकाबुडा तथा सिंघाली का भ्रमण किया गया।
श्रीमती सिंह द्वारा सभी स्वच्छाग्राही से गांव में हो रहे कचरा कलेक्शन के गीले और सूखे कचरे के पृथकीकरण के विषय में विस्तार से चर्चा किया गया। ग्रामीणों द्वारा घर से देने वाले कचरे को अलग अलग करने हेतु आग्रह एवं सभी लोगो को प्रेरित किया गया। यूज़र चार्जेस एवं प्रोत्साहन राशि के विषय में चर्चा कर स्वच्छग्राहियों का उत्साहवर्धन किया।गांव में निर्मित सामुदायिक शौचालय का निरीक्षण कर उनके निरंतर उपयोग व रखरखाव के बारे में बताया गया। इसमें जिला समन्वयक, ब्लॉक समन्वयक, स्वच्छाग्राही के अध्यक्ष, सचिव,समूह की दीदियां, व गांव के सरपंच, सचिव,ग्रामीण जन उपस्थित रहे।

ओबीसी कमीशन के अध्यक्ष विश्वकर्मा ने अधिकारियों की बैठक ली

कोरबा। छत्तीसगढ़ ओबीसी कमिशन के अध्यक्ष आर एस विश्वकर्मा ने कहा है कि पिछड़ा वर्ग की स्थिति को जानने के लिए लगातार काम किया जा रहा है। इसके अंतर्गत यह पता चल सकेगा की ओबीसी में भी सबसे ज्यादा पिछड़े कौन सी आती है और इस आधार पर बजट की मांग करने और योजना बनाने में सहूलियत होगी। उन्होंने बताया कि सभी जिलों से ओबीसी हॉस्टल बनाने की मांग आ रही है और हम इस आधार पर सरकार को रिपोर्ट करेंगे।

स्वास्थ्य मंत्री श्याम बिहारी जायसवाल ने पूर्व विधानसभा उपाध्यक्ष बनवारी लाल अग्रवाल को दी श्रद्धांजलि

कोरबा । छत्तीसगढ़ शासन के लोक स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्री श्री श्याम बिहारी जायसवाल ने पूर्व विधानसभा उपाध्यक्ष एवं वरिष्ठ जनप्रतिनिधि स्वर्गीय श्री बनवारी लाल अग्रवाल के निधन पर गहरा शोक व्यक्त किया। उन्होंने गुरुवार को श्री अग्रवाल के निवास स्थान जाकर उन्हें विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित की और शोकाकुल परिजनों से मुलाकात कर संवेदना व्यक्त की।
स्वास्थ्य मंत्री श्री जायसवाल स्वर्गीय अग्रवाल की अंतिम यात्रा में भी सम्मिलित हुए और मोतीसागर पारा स्थित मुक्तिधाम में पुष्पांजलि अर्पित कर उन्हें अंतिम विदाई दी। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि स्वर्गीय बनवारी लाल अग्रवाल जी ने कोरबा जिले के गरीबों और आम जनता की आवाज को सदैव बुलंद किया। उन्होंने जिले के सर्वांगीण विकास में उल्लेखनीय योगदान दिया। साडा (विशेष क्षेत्र विकास प्राधिकरण) कोरबा के अध्यक्ष के रूप में उन्होंने शहर के विकास के लिए अनेक महत्वपूर्ण कार्य किए।
इस अवसर पर कटघोरा विधायक श्री प्रेमचंद पटेल, कोरबा एसडीएम श्री सरोज महिलांगे, अन्य जनप्रतिनिधि, गणमान्य नागरिक एवं बड़ी संख्या में ष्नगरवासी एवं उनके शुभचिंतक उपस्थित रहे। सभी ने स्वर्गीय श्री अग्रवाल को पुष्प अर्पित कर उन्हें श्रद्धांजलि दी।

आरोग्य के देवता के अवतरण दिवस पर आयुष चिकित्सकों का होगा सम्मान

कोरबा। आयुर्वेद के प्रवर्तक, आरोग्य के देवता भगवान श्री धनवंतरी 2 की जयंती इस वर्ष कार्तिक कृष्ण त्रयोदशी, शनिवार 18 अक्टूबर 2025 को श्रद्धा और उल्लास के साथ मनाई जाएगी। यह कार्यक्रम प्रातः 11 बजे से महानदी कॉम्प्लेक्स, निहारिका स्थित पतंजलि चिकित्सालय और श्री शिव औषधालय परिसर में आयोजित होगा।
इस अवसर पर नगर पालिक निगम कोरबा की महापौर श्रीमती संजू देवी राजपूत मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहेंगी। कार्यक्रम की अध्यक्षता जिला आयुर्वेद अधिकारी डॉ. उदय शर्मा करेंगे, जबकि विशिष्ट अतिथि के रूप में नमामी हसदेव सेवा समिति के कार्यकारी अध्यक्ष रणधीर पांडे रहेंगे। धनवंतरी जयंती का यह आयोजन आयुष मेडिकल एसोसिएशन, आरोग्य भारती, विश्व हिंदू परिषद, लायंस क्लब कोरबा एवरेस्ट, शिव औषधालय एवं पतंजलि चिकित्सालय के संयुक्त तत्वावधान में किया जा रहा है। समारोह का उद्देश्य विश्व कल्याण, आरोग्य संवर्धन एवं धन-संपदा की वृद्धि के लिए सामूहिक प्रार्थना करना है।
धार्मिक विधि-विधान के साथ भगवान श्री धनवंतरी जी का षोडशोपचार पूजन और सामूहिक आरती संपन्न की जाएगी। कार्यक्रम के संयोजक एवं आयुष मेडिकल एसोसिएशन के अध्यक्ष डॉ. नागेंद्र नारायण शर्मा ने बताया कि समारोह में छत्तीसगढ़ के सुप्रसिद्ध भजनोपदेशक एवं राज्यपाल से पुरस्कृत पंडित शिवराज शर्मा, एक शाम शहीदों के नाम के लिए प्रसिद्ध गायक डॉ. रवि शराफ तथा संदीप शर्मा अपनी सुमधुर आवाज में भजन और देशभक्ति गीतों की शानदार प्रस्तुति देंगे।डॉ. नागेंद्र नारायण शर्मा ने समस्त चिकित्सकों, आयुर्वेद मनीषियों, धर्मावलंबियों, आयुर्वेद प्रेमियों तथा नगर के नागरिकों से अधिकाधिक संख्या में उपस्थित होकर भगवान धनवंतरी के पूजन-अर्चन में सहभागी बनने और सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामयाः की भावना को साकार करने की अपील की है।

नारी सशक्तिकरण की दिशा में एक सशक्त पहल :सरस्वती शिशु मंदिर में सप्तशक्ति मातृ संगम का हुआ भव्य आयोजन

कोरबा । सरस्वती शिशु मंदिर उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, कुसमुंडा में दिनांक 15 अक्टूबर 2025, बुधवार को नारी जागरण एवं सशक्तिकरण को समर्पित सप्तशक्ति मातृ संगम का भव्य आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम का उद्देश्य मातृशक्ति को सामाजिक परिवर्तन के लिए प्रेरित करना तथा उन्हें राष्ट्र निर्माण की दिशा में सक्रिय भूमिका के लिए जागरूक करना था। कार्यक्रम में नगर की अनेक प्रतिष्ठित महिलाएं, जनप्रतिनिधि, शिक्षिकाएं एवं अभिभाविकाएं सम्मिलित हुईं।
सरस्वती शिशु मंदिर उच्चतर माध्यमिक विद्यालय कुसमुंडा में दिनांक 15.10.25 दिन बुधवार को सप्त शक्ति मातृ संगम का आयोजन किया गया। इस अवसर पर मुख्य अतिथिद्वय श्रीमती सोनी कुमारी विकास झा (अध्यक्ष नगर पालिका बाकी मोगरा), श्रीमती प्रमिला दीदी (पार्षद, गजरा) एवं अध्यक्षता श्रीमती डॉक्टर नीतू डेका (एसईसीएल चिकित्सालय आदर्श नगर), साथ ही विशिष्ट अतिथि के रूप में श्रीमती नेहा गुप्ता (अभिभाविका), श्रीमती पुनीता कश्यप दीदी (गायत्री मंदिर कुसमुंडा) एवं संस्था के प्राचार्य श्री चिंतामणि कौशिक जी मंच पर उपस्थित थे।
कार्यक्रम का शुभारंभ मां सरस्वती, ओम, भारत माता के चित्र के समक्ष दीप प्रज्वलन एवं पूजन अर्चन से हुआ । संस्था के प्राचार्य श्री चिंतामणि कौशिक ने सप्तशक्ति संगम का उद्देश्य बताते हुए कहा कि संघ के शताब्दी वर्ष 2025 के उपलक्ष्य में मातृशक्ति को पञ्च परिवर्तन की जानकारी देना जिसमें कुटुम्ब प्रबोधन, पर्यावरण, नागरिक कर्तव्य, स्वदेशी का भाव, एवं सामाजिक समरसता द्वारा राष्ट्र का नवनिर्माण करना है। गायत्री मंदिर के पुनीता दीदी ने भगवत गीता में वर्णित नारियों की सप्त शक्तियों का स्मरण करवाया।
कार्यक्रम की अध्यक्ष डॉक्टर नीतू डेका ने कहा कि सरस्वती शिशु मंदिर विद्यालयों में यह अभियान मातृशक्ति को जागृत कर समाज में संस्कार आत्म बल और स्वाभिमान की भावनाओं को सशक्त कर रहा है। विशिष्ट अतिथि के रूप में अभिभावक श्रीमती नेहा गुप्ता ने बच्चों के पालन पोषण में मां की अहम भूमिका से परिचित कराया। इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्रीमती सोनी विकास झा ने कुटुंब व्यवस्था को भारतीय जीवन का आधार बताया। कार्यक्रम के दौरान श्रीमती हेमलता शर्मा दीदी जी द्वारा प्रश्नोत्तरी एवं राष्ट्रभक्ति गीत का आयोजन किया गया जिसमें स्थान प्राप्त महिलाओं को पुरस्कृत किया गया। इस कार्यक्रम में 200 से अधिक अभिभाविकाओं ने उपस्थित होकर अपने सुझाव प्रस्तुत करते हुए कार्यक्रम की खूब प्रशंसा की। इस पूरे कार्यक्रम का सफल संचालन श्रीमती संगीता वर्मा दीदी ने किया। अंत में विद्यालय के वरिष्ठ आचार्य श्री दीपचंद जँघेला द्वारा आभार ज्ञापित कर शांति मंत्र से कार्यक्रम का समापन किया गया।कार्यक्रम को सफल बनाने में विद्यालय के प्रभारी प्राचार्य श्री शांति कुमार राठौर, सप्तशक्ति संगम के मुख्य वक्ता श्रीमती अंजना पाराशर दीदी जी, श्रीमती काकोली चौधरी, श्रीमती तनु मुखर्जी, श्रीमती संगीता दुबे, श्रीमती भोगवती राजन, श्रीमती भूमोती जांघेला, श्रीमती सुधा चौबे, श्रीमती सीमा दीवान, श्रीमती खगेश्वरी चंद्रा दीदी जी एवं समस्त आचार्य परिवार की महत्वपूर्ण भूमिका रही।

ऑक्सीजन की कमी से नवजात बच्चे की हुई मौत

महिला के पति ने आरोप लगाए, अस्पताल ने किया खारिज

कोरबा । मेडिकल कॉलेज हॉस्पिटल में प्रसूता किरण विश्वकर्मा का प्रसव किसी तरह संपन्न हो गया लेकिन उसके द्वारा जन्मे नवजात की मौत हो गई। किरण के पति ने अस्पताल प्रबंधन पर लापरवाही बरतने का आरोप लगाया है जबकि अस्पताल के डॉक्टर में इस प्रकार के आरोप को खारिज किया। अयोध्या जलगांव के रहने वाले आशीष विश्वकर्मा ने बताया कि दोपहर को वह गर्भवती पत्नी किरण को अस्पताल लेकर आया था। बाद किरण को कोरबा रेफर किया गया था। यहां पर प्रसव में समस्या होने पर उपेक्षा की गई। जबकि अस्पताल प्रबंधन का कहना है कि किरण के दो प्रसव पहले भी सामान्य हुए थे इसलिए तीसरी प्रसव को लेकर कोई समस्या नहीं होनी चाहिए थी। लेबर रूम में टीम ने महसूस किया कि प्रसव के दौरान किरण के द्वारा सहयोग नहीं किया जा रहा था इससे दिक्कत हुई। डॉक्टर ने बताया कि इस वजह से बच्चेदानी में खतरा हुआ जब तक हम ऑपरेशन की तैयारी करते, बच्चा डिलीवर हो गया था। पूरे मामले में ऑक्सीजन की कमी से बच्चे की मौत हुई है। जिस प्रकार के आरोप लगाए जा रहे हैं, उनका कोई आधार नहीं है।इससे पहले भी अस्पतालों में मरीजों की स्थिति बिगड़ने और अन्य हालात उत्पन्न होने पर आरोप प्रत्यारोप का सिलसिला होता ही है। किरण विश्वकर्मा के बच्चे की मौत के बाद आगे क्या कुछ कदम उठाए जाते हैं इसका सभी को इंतजार है।

जानकी यादव ने व्यवसाय शुरू किया

जांजगीर-चांपा। बिहान योजना के तहत जिले की महिलाएँ प्रधानमंत्री आवास निर्माण में भी अहम भूमिका निभा रही हैं। जानकी यादव जैसी सदस्य आज न केवल अपने परिवार को संवार रही हैं, बल्कि सामुदायिक विकास में भी योगदान दे रही हैं। सबसे पहले समूह को 60 हजार सामुदायिक निवेश कोष प्राप्त हुआ, जिससे जानकी यादव ने अकेले ऋण लेकर छोटा कपड़े का व्यवसाय शुरू किया। यह कदम उनके आत्मनिर्भर बनने की ओर पहला मजबूत प्रयास था। इसके बाद समूह के माध्यम से बैंक से ऋण सुविधा मिली। जानकी यादव ने 80 हजार का लोन लेकर सबसे पहले अपना गिरवी रखा खेत छुड़वाया। फिर सन 2024 में उन्होंने पुनः 60 हजार का ऋण लेकर सेंट्रिंग प्लेट्स एवं अन्य मकान निर्माण संबंधी उपकरण खरीदे और दूसरा आजीविका कार्य शुरू किया। आज उनका सेंट्रिंग व्यवसाय प्रधानमंत्री आवास योजना के निर्माण कार्यों लगाया जा रहा है जिससे उन्हें निरंतर अच्छी आमदनी हो रही है। आज जानकी यादव न केवल अपने परिवार का भरण-पोषण करने में सक्षम हैं, बल्कि अपनी बेटी को रायपुर में नर्सिंग की पढ़ाई भी करवा रही हैं। जानकी यादव कहती कि पहले मेरी स्थिति बहुत खराब थी, लेकिन बिहान योजना से जुड़ने के बाद मेरे जीवन में उजाला आया। अब मैं आत्मनिर्भर हूँ और अपने परिवार को सम्मानजनक जीवन दे पा रही हूँ। गाँव की अन्य महिलाएँ भी इस योजना से जुड़कर आत्मनिर्भर बन रही हैं।

राज्य पुरस्कार कार्यक्रम में स्काउट गाइड ने दिया प्रजेंटेशन, बदलाव लाने का संकल्प

जांजगीर। भारत स्काउट्स एवं गाइड्स छत्तीसगढ़ के तत्वावधान में आयोजित राज्य पुरस्कार स्काउट-गाइड जांच परीक्षा शिविर में प्रदेश के छह जिलों के 339 चयनित स्काउट्स और गाइड्स ने अनुशासन, सेवा भावना और टीमवर्क की अनूठी मिसाल पेश की। यह पांच दिवसीय राज्य स्तरीय शिविर जांजगीर में राज्य मुख्य आयुक्त इंद्रजीत सिंह खालसा के निर्देशानुसार और राज्य सचिव जितेन्द्र साहू के मार्गदर्शन में सफलतापूर्वक आयोजित किया गया।

शिविर का प्रमुख आकर्षण था रविवार, 15 अक्टूबर को आयोजित महाज्वाल समारोह, जिसे उत्साह और गरिमा के साथ मनाया गया। इस अवसर पर कार्यक्रम के मुख्य अतिथि संयुक्त संचालक शिक्षा रामायण आदित्य ने महाज्वाल प्रज्वलित कर समारोह का शुभारंभ किया। उन्होंने स्काउटिंग को जीवन निर्माण की साधना बताया, जो सेवा, सहयोग और संस्कार का समन्वय सिखाती है। कार्यक्रम में विशेष अतिथि अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक (ट्रैफिक) उदयन बेहार ने स्काउट्स-गाइड्स को समाज में सकारात्मक भूमिका निभाने का संदेश दिया। कार्यक्रम की अध्यक्षता जिला मुख्य आयुक्त हितेश यादव ने की।

बीईओ बिल्हा भूपेंद्र कुमार कौशिक, मंडल महामंत्री सोनू यादव, गोलू दुबे, रवि पांडेय और प्रदीप राठौर भी मंच पर मौजूद थे। साथ ही परिक्षण जगदीश साहू, गाइड मुख्य पर्यवेक्षक गणेशी सोनकर, पवन कुमार नायक, दीपक पाण्डेय, डिगम्बर कौशिक, शत्रुहन सूर्यवंशी, एस.आर. अमित, पुष्पा सांडिल्य, सतरूपा बसंत, पूर्णिमा भट्टाचार्य, संजीव मिश्रा और सिंधुलता सरल ने किया।

स्काउट विंग का प्रशिक्षण केशरी शिक्षा महाविद्यालय, खोखरा में चल रहा है जबकि गाइड विंग का प्रशिक्षण ज्ञान रोशनी शिक्षा महाविद्यालय, खोखरा में जारी है। इस कार्य में डॉ. अखिलेश कटकवार और डॉ. सुरेश यादव का विशेष योगदान रहा है। शिविर संचालन में डीओसी (गाइड) कु. श्वेता जायसवाल, ट्रेनिंग काउंसलर संजय कुमार यादव, क्वार्टर मास्टर राजेन्द्र कश्यप, परमेश्वर सिंह टेकाम, नेपाल सिंह कंवर (एडवांस एसएम), संयुक्त सचिव गौरी साहू, पूर्व डीटीसी उमा महोबिया, अरुणा व्यास मिरी, ख्याति सोनी (एडवांस गाइड कैप्टन) और विभिन्न जिलों के प्रभारियों ने योगदान दिया।

सहायक जेल अधीक्षक सतीश चंद्र भार्गव निलंबित

उपजेल के बाहर युवक से मारपीट का मामला

सक्ती। छत्तीसगढ़ के सक्ती उपजेल के बाहर एक युवक के साथ मारपीट का वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल होने के बाद बड़ा प्रशासनिक एक्शन लिया गया है। इस मामले में जेल विभाग ने तत्काल संज्ञान लेते हुए सहायक जेल अधीक्षक सतीश चंद्र भार्गव को निलंबित कर दिया है। जेल एवं सुधारक सेवाएं के महानिदेशक द्वारा जारी निलंबन आदेश में कहा गया है कि प्रारंभिक जांच में सतीश चंद्र भार्गव द्वारा सिविल सेवा आचरण नियमों के उल्लंघन के संकेत मिले हैं। इसके चलते उन्हें रायपुर स्थित जेल एवं सुधारक सेवाएं महानिदेशक कार्यालय में अटैच किया गया है। मामला उस समय चर्चा में आया जब उपजेल के सामने जेलर और तीन आरक्षकों द्वारा एक युवक की पिटाई का वीडियो वायरल हुआ। बताया जा रहा है कि युवक जेल परिसर में नशे की हालत में पहुंचा था और वहां बंद अपने एक साथी कैदी से मिलने की जिद कर रहा था। जेलर का कहना है कि युवक कई बार समझाने के बावजूद नहीं माना और उसने उन पर हमला कर दिया, जिसके बाद यह कार्रवाई की गई। हालांकि घटना के वीडियो वायरल होते ही प्रशासन हरकत में आया और तत्काल जांच के बाद निलंबन का फैसला लिया गया। फिलहाल मामले की गहन जांच जारी है और दोषियों के खिलाफ आगे की कार्रवाई की तैयारी की जा रही है।

211 छात्र-छात्राओं का स्वास्थ्य परीक्षण कर दवा बांटी

अकलतरा। नगर के राजेन्द्र कुमार सिंह उच्चतर माध्यमिक शाला में स्वास्थ्य विभाग द्वारा छत्तीसगढ़ रजत जयंती वर्ष कार्यक्रम के अंतर्गत मिडिल स्कूल में अध्ययनरत छात्र-छात्राओं का स्वास्थ्य परीक्षण डॉ. स्वप्निल दुबे,डॉ. मधुलिका श्रीवास और स्वास्थ्य विभाग की टीम द्वारा किया गया। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए शाला के प्राचार्य आरके विश्वकर्मा ने कहा कि अपने स्वास्थ्य का नियमित रूप से परीक्षण करवाने के साथ किसी प्रकार की समस्या आने पर तत्काल डॉक्टर से इलाज करवाना चाहिए। खाना खाने से पहले हाथ धोने के साथ शरीर को स्वच्छ रखना चाहिए। डॉ. स्वप्निल दुबे और डॉ. मधुलिका श्रीवास ने छात्र-छात्राओं को पौष्टिक आहार के बारे में जानकारी देने के साथ स्वास्थ्य के प्रति जागरूक किया। शिविर में 75 छात्राओं और 136 छात्रों का स्वास्थ्य परीक्षण करने के साथ दवाइयों का वितरण चिरायु टीम ने किया।

बिहान की दीदियों की खास पहल, 'संगिनी' ब्रांड के तहत बना रही हैं सुंदर गिफ्ट हैम्पर

सक्ती। दीपावली पर छत्तीसगढ़ राज्य ग्रामीण आजीविका मिशन बिहान के अंतर्गत सक्ती विकासखंड के ग्राम पलाड़ीखुर्द की राधा कृष्ण स्व-सहायता समूह की महिलाओं द्वारा एक अभिनव पहल की जा रही है।

समूह की महिलाएं संगिनी ब्रांड के तहत आकर्षक और सुगंधित डिजायनर मोमबत्तियों के साथ-साथ विशेष गिफ्ट हैम्पर तैयार कर रही हैं, जिससे उन्हें आय सृजन का सशक्त साधन मिल रहा है।

समूह की सदस्य पुष्पा दीदी ने बताया कि उन्होंने पहले आर-सेटी से डिजायनर कैंडल बनाने का प्रशिक्षण प्राप्त किया था। इसके बाद यूट्यूब से प्रेरणा लेकर उन्होंने त्योहारों को ध्यान में रखते हुए गिफ्ट हैम्पर तैयार करने की योजना बनाई। दीदीयों द्वारा बनाए जा रहे उत्पादों में डिजायनर मोमबत्तियों के साथ-साथ राखी, रंगोली, आचार, गुलाल आदि भी शामिल हैं। दीपावली सीजन को देखते हुए जिले में स्थापित विभिन्न इंडस्ट्रीज से गिफ्ट हैम्पर के लिए ऑर्डर मिल रहे हैं, जिसकी आपूर्ति दीदियों द्वारा समय पर की जा रही है।

इन प्रयासों से उन्हें 1.5 से 2.0 लाख रुपये तक का व्यवसाय मिलने की संभावना है, जिससे उनके आत्मविश्वास और उत्साह में काफी वृद्धि हुई है। इस पहल को सफल बनाने में जिला प्रशासन, सक्ती द्वारा भी निरंतर सहयोग किया जा रहा है, ताकि ग्रामीण महिलाएं स्थानीय बाजार में अपनी पहचान बना सकें और आत्मनिर्भर बनें।

नगर पंचायत की जमीन से हटाया बेजाकब्जा

दो समुदायों ने अपना समझकर यहां निर्माण किया, नोटिस के बाद कार्यवाही

जांजगीर-चांपा। जिले के नगर पंचायत शिवरीनारायण में प्रस्तावित शॉपिंग कॉम्प्लेक्स की भूमि से अवैध अतिक्रमण हटाया गया है। डेढ़ एकड़ की इस भूमि पर इस्लाहुल मुस्लिमिन शिक्षा समिति (मदरसा) और गौ माता औषधालय ने 15 डिसमिल क्षेत्र पर कब्जा कर निर्माण कर लिया था।

अतिक्रमण हटाने के लिए दो जेसीबी मशीनों का इस्तेमाल किया गया। इस दौरान किसी भी अप्रिय घटना को रोकने के लिए भारी संख्या में पुलिस बल तैनात किया गया था। नगर पंचायत शिवरीनारायण ने मदरसा और गौ माता औषधालय को 15 अक्टूबर तक अवैध कब्जा हटाने का निर्देश दिया था।

समय सीमा समाप्त होने के बाद भी अतिक्रमण नहीं हटाए जाने पर यह कार्रवाई की गई। आज सुबह 7 बजे से सुरक्षा व्यवस्था के बीच यह कार्रवाई शुरू हुई। एसडीएम, तहसीलदार और एएसपी उमेश कश्यप के नेतृत्व में एक टीम मौके पर पहुंची और अतिक्रमण को सफलतापूर्वक हटाया।

दिवाली पर मिठाइयों की जांच, रिपोर्ट 2 महीने बाद आएगी

बिलासपुर। दिवाली त्योहार के ठीक पहले फूड सेफ्टी अफसरों ने 18 से अधिक मिठाई दुकानों में दबिश दी। इस दौरान खोवा, छेने सहित गोंद लड्डू, काला जामुन के सैंपल लिए गए। विभाग ने अब तक डेढ़ दर्जन दुकानों से सैंपल लेकर जांच के लिए रायपुर भेजा है, जिसकी रिपोर्ट त्योहार के दो महीने बाद आएगी। ऐसे में लोगों को यह पता नहीं चलेगा कि वे जो मिठाई खा रहे हैं वह मानक है अमानक।

त्योहारी सीजन में मिलावटी या गुणवत्ताहीन मिठाइयों की जांच करने जिले में खाद्य सुरक्षा अधिकारियों की टीम ने मिठाई दुकानों में पहुंची। खाद्य सुरक्षा अधिकारी अविषा मरावी और अंकित गुप्ता के नेतृत्व में तखतपुर स्थित मेसर्स हरिओम स्वीट्स से बुंदी लड्डू और काजू बर्फी, शहर में सत्यम स्वीट्स से रोल बर्फी, महेश स्वीट्स तारबाहर से काला जामुन, बेकर्स फर्म तारबाहर से मथुरा पेड़ा और दिल्ली स्वीट्स रिंग रोड से गोंद लड्डू के नमूने लिए गए। इसके अलावा मनोज स्वीट्स मुंगेली नाका, महामाया स्वीट्स मुंगेली नाका सहित अन्य प्रतिष्ठानों से सैंपलों को परीक्षण और विश्लेषण के लिए रायपुर स्थित राज्य खाद्य परीक्षण प्रयोगशाला भेजा गया है।

जांच के दौरान टीम ने दुकानों में साफ-सफाई, भंडारण की स्थिति और मिठाइयों की गुणवत्ता की भी बारीकी से पड़ताल की। अफसरों ने कहा कि रिपोर्ट आने के बाद यदि सैंपलों में मिलावट या गुणवत्ता में कमी पाई जाती है, तो खाद्य सुरक्षा एवं मानक अधिनियम 2006 और नियम विनियम 2011 के अंतर्गत कार्रवाई की जाएगी। चलित खाद्य प्रयोगशाला वाहन की मदद से जिले के ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में भी मौके पर जाकर खाद्य पदार्थों की जांच की जा रही है।

पतरापारा में 44 एकड़ गोचर भूमि पर कब्जा, कार्रवाई की मांग

उदयपुर। सरगुजा जिले के विकासखंड उदयपुर की ग्राम पंचायत पतरापारा में लगभग 44 एकड़ गोचर भूमि पर अवैध कब्जे का मामला फिर से गरमा गया है। ग्रामीणों का आरोप है कि सुशासन तिहार में दिए आवेदन के बावजूद प्रशासन की ओर से कोई ठोस कार्रवाई नहीं हुई, जिससे नाराज होकर उन्होंने एक बार फिर उदयपुर एसडीएम को ज्ञापन सौंपा है और त्वरित कार्रवाई की मांग की है।

मामला ग्राम पंचायत उदयपुर अंतर्गत पतरापारा की खसरा नंबर 29/1 (6.318 हे.) और 504 (11.521 हे.) गोचर भूमि से जुड़ा है, जिस पर ग्रामीणों का कहना है कि स्थानीय लोगों ने अतिक्रमण कर मकान तक बना लिए हैं। ग्रामीणों ने मांग की है कि इस सार्वजनिक चरनोई भूमि से बेजा-कब्जा तत्काल हटाया जाए, ताकि पशुधन के लिए सुरक्षित जगह बनी रह सके। ज्ञापन सौंपने वालों में आदित्य सिंह, इसबल सिंह उईके, अमीरसाय, दिलबोध सिंह, पंचांग सिंह, संतराम, धर्मेश सिंह, हरिबिलस, फूलासो सिंह, बॉबी सिंह, अनिला सिंह, बिजेश्वरी सिंह समेत ग्रामीण शामिल रहे। आवेदन मेरे पास नहीं- गुप्ता हल्का पटवारी संतोष गुप्ता का कहना है कि मैं 7-8 महीने से यहां पदस्थ हूं। सुशासन तिहार में दिए आवेदन मेरे पास नहीं पहुंचे। दोनों प्लॉट गोचर मद की भूमि हैं।

बम्हनीडीह में दुकान में चोरी करने वाला गिरफ्तार

जांजगीर। बम्हनीडीह पुलिस ने दुकान का ताला तोड़ गुटखा और सिगरेट चुराने वाले आरोपी को गिरफ्तार कर लिया है। आरोपी से चोरी गया सामान, घटना में प्रयुक्त रॉड और तीन पहिया रिक्शा भी बरामद किया है। गत 14 अक्टूबर की रात बम्हनीडीह बस स्टैंड स्थित प्रार्थी गगन अग्रवाल की दुकान का ताला तोड़कर चोर ने 20,000 का माल पार किया था। रिपोर्ट पर थाना बम्हनीडीह में मामला दर्ज कर विवेचना शुरू की गई। विवेचना के दौरान मुखबिर से सूचना मिली कि गांव का आदतन चोर जुबेरअली पिता रमजान अली (उम्र 26 वर्ष) घटना की रात संदिग्ध रूप से घूमते देखा गया था। सूचना पर पुलिस ने उसे साप्ताहिक बाजार के पास से दबोचा। पूछताछ में उसने चोरी करना स्वीकार किया। पुलिस ने आरोपी को गिरफ्तार कर लिया।

ट्रांसपोर्ट कंपनी की सुपरवाईजर से मारपीट करने वाले गिरफ्तार

जांजगीर। शराब पीने पैसे की मांग कर मारपीट करने वाले पांच आरोपियों को गिरफ्तार कर जेल भेजा गया है। भागवत प्रसाद राठौर, निवासी घघरा थाना खरसिया ने रिपोर्ट दर्ज कराई कि वह पांडेय रोड लाइंस में सुपरवाइजर है। गत 7 अगस्त 2025 की शाम करीब 7 बजे वह ड्रायवरों को खर्चा देने बिरगहनी महावीर कोलवाशरी गया था।

कोलवाशरी के बाहर नवीन रात्रे, रमन सांडे और साथी मौजूद थे। उन्होंने उससे शराब पीने के लिए पैसे मांगे। उसके इनकार करने पर गाली-गलौज कर मारपीट की और जान से मारने की धमकी दी। शिकायत पर जुर्म दर्ज किया गया।

जांच के दौरान ने आरोपियों की पतासाजी कर गिरफ्तार किया गया। गिरफ्तार आरोपियों में नवीन रात्रे 25 वर्ष, रमन सांडे 20 वर्ष, सत्येन्द्र जोशी 19 वर्ष, करूपाल सांडे 26 वर्ष व अजीत कुमार पाटले 26 वर्ष शामिल हैं।

9 नवंबर को होगा वन डे रैपिड शतरंज टूर्नामेंट

जांजगीर। जिला शतरंज संघ जांजगीर-चांपा ने जीएच रायसोनी मेमोरियल वन डे रैपिड चैस टूर्नामेंट का आयोजन 9 नवंबर को गुरुकुल इंटरनेशनल स्कूल बनारी में किया गया है। यह प्रतियोगिता विशेष रूप से जांजगीर-चांपा व सक्ती जिले के खिलाड़ियों के लिए आयोजित की जा रही है। प्रतियोगिता चार श्रेणियों अंडर-9, अंडर-13, अंडर-15 और ओपन कैटेगरी में आयोजित होगी, जिसमें लड़के और लड़कियां एक साथ भाग लेंगे। खेल का टाइम कंट्रोल 15 मिनट5 सेकंड इन्क्रीमेंट रहेगा। टूर्नामेंट में 30,000 हजार की पुरस्कार राशि के साथ विजेताओं को कैश प्राइज, ट्रॉफी, मेडल और ई-सर्टिफिकेट प्रदान किए जाएंगे। विशेष पुरस्कारों में बेस्ट यंगेस्ट प्लेयर, बेस्ट वेटरन (55+), बेस्ट विमन प्लेयर और बेस्ट फिजिकली चैलेंज्ड प्लेयर शामिल हैं।

पीला महल में मंत्री खुशवंत साहेब का भव्य स्वागत अजगर माला और फटाकों से गूंज उठा शहर

सक्ती। छत्तीसगढ़ शासन के कैबिनेट मंत्री एवं सक्ती जिले के प्रभारी मंत्री खुशवंत साहेब के प्रथम सक्ती आगमन पर मंगलवार को अभूतपूर्व उत्साह देखने को मिला। स्वागत कार्यक्रम का नेतृत्व जिला पंचायत सदस्य (सभापति) राजा धर्मेंद्र सिंह ने किया, जिनकी अगुवाई में हजारो की संख्या में शहर और ग्रामीण अंचल से लोग स्वागत के लिए एकत्र हुए। पीला महल परिसर में मंत्री खुशवंत साहेब को भव्य अजगर माला पहनाकर सम्मानित किया गया, जो पूरे समारोह का विशेष आकर्षण बना।

लोगों ने फूल-मालाओं और जयघोषों के साथ मंत्री का स्वागत किया। इसके साथ ही रंग-बिरंगे गुब्बारे आसमान में छोड़े गए, जिससे वातावरण और भी आनंदमय हो गया। स्वागत समारोह में उपस्थित विशाल जनसमूह को संबोधित करते हुए मंत्री खुशवंत साहेब जी ने सक्ती की जनता के प्रेम और स्नेह के प्रति हृदय से आभार व्यक्त किया। उन्होंने कहा कि सक्ती उनका अपना घर है, और यहां के विकास के लिए वे हर संभव प्रयास करेंगे। उन्होंने भरोसा दिलाया कि क्षेत्र में शिक्षा, स्वास्थ्य, सड़क और रोजगार जैसे मूलभूत क्षेत्रों में जल्द ही नए प्रोजेक्ट शुरू किए जाएंगे, जिससे आम नागरिकों और युवाओं को बेहतर सुविधाएं मिलेंगी।

मंत्री ने अपने उद्बोधन में विशेष रूप से राजा धर्मेंद्र सिंह का उल्लेख करते हुए कहा कि उनके नेतृत्व में किया गया यह स्वागत समारोह अतुलनीय है।

उन्होंने कहा कि पीला महल के सामने राजा धर्मेंद्र सिंह द्वारा की गई तैयारी और आयोजन की व्यवस्था अत्यंत सराहनीय रही, जो उनके जनसेवा के समर्पण को दर्शाता है। इस अवसर पर नगर एवं ग्रामीण क्षेत्रों से आए जनप्रतिनिधि, पार्टी कार्यकर्ता, सामाजिक संगठन के सदस्य और बड़ी संख्या में नागरिक उपस्थित रहे। पूरे कार्यक्रम के दौरान उत्साह, सौहार्द और भाईचारे का माहौल बना रहा।

कार्यक्रम के अंत में मंत्री खुशवंत साहेब ने कहा कि सरकार की जनकल्याणकारी योजनाओं का लाभ अब हर घर तक पहुंचाना ही उनकी प्राथमिकता है। उन्होंने कहा कि आने वाले समय में सक्ती क्षेत्र को विकास के नए आयामों से जोड़ा जाएगा। इस कार्यक्रम में रतिराम सिदार, पुष्पेंद्र चंद्रा, रोहित दोहरे,सुरेश जायसवाल, रामसिंह, कमल राठौर, इशांत राठौर, सूरज सोना, जग्गन्नाथ सिदार, रामगोविंद, पुरनेश, रवि गवेल,रामेश्वर, कोमल, लव कुमार चंद्र कुमार,बोकरामुड़ा सरपंच, कीर्तन सिदार, शिवनाथ बरेठ,गोरख मुख्य रूप से उपस्थित रहे ।

अब कलेक्टर से शिकायत, परीक्षा फीस 190 रुपए, 950 लेकर भी रसीद नहीं दी

जांजगीर। जांजगीर स्वामी आत्मानंद उत्कृष्ट अंग्रेजी माध्यम विद्यालय, डोंगाकोहरौद के विद्यार्थी गुरुवार को कलेक्टोरेट पहुंचे। उन्होंने कलेक्टर से मिलकर प्रभारी प्राचार्य डॉ. कुंज किशोर की अनियमितताओं का कच्चा-चिट्ठा खोला और लिखित शिकायत पत्र देकर कार्रवाई की मांग की। शिकायत में प्राचार्य के व्यवहार, अनुचित शुल्क वसूली व अनुशासनहीन गतिविधियों को लेकर कई बिंदुओं पर असंतोष जताया। छात्रों ने कहा 12वीं के छात्रों से बोर्ड परीक्षा के नाम पर 950 रुपए वसूले हैं, जबकि वास्तविक फीस 190 रुपए है। हर छात्र से 760 रुपए की वसूली की।

आरोप है कि फीस की रसीद मांगने पर पावती नहीं दी और उल्टा छात्रों को डांटकर चुप करा दिया। 9वीं से 12वीं तक के छात्रों पर स्पोर्ट्स यूनिफॉर्म लेने दबाव बना रहे हैं। यूनिफॉर्म नहीं लेने पर स्कूल से निकालने की धमकी मिल रही है। इस विषय में पूछने पर प्रताड़ित करते हैं, जिससे वे मानसिक तनाव में हैं। छात्रों ने जो शिकायत की है, उसकी जांच की जा रही है।

अशोक सिन्हा, डीईओ, जांजगीर-चांपा

हाई स्कूल सलका की 66 छात्राओं को मिली साइकिल

उदयपुर। विकासखंड उदयपुर के हाई स्कूल सलका में बालिका शिक्षा को बढ़ावा देने के उद्देश्य से शासन की महत्वाकांक्षी योजना के तहत निशुल्क सरस्वती साइकिल योजना अंतर्गत 66 नव प्रवेशी छात्राओं को साइकिल वितरण किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि देवगढ़ मंडल अध्यक्ष अखंड विधायक सिंह रहे। इस मौके पर मुख्य अतिथि ने कहा डॉक्टर रमन सिंह ने बालिकाओं की शिक्षा में बढ़ावा देने सरस्वती साइकिल योजना का शुभारंभ किया। आज ग्रामीण इलाकों में भी बालिका स्कूल समय पर पहुंच पा रही हैं, इसलिए क्योंकि उन्हें भाजपा सरकार की यह महत्वपूर्ण योजना की लाभ मिल रही है। साइकिल मिलने पर बालिकाओं के चेहरे में मुस्कान खिलती है।

कार्यालय, नगर पालिक निगम, कोरबा (छत्तीसगढ़)

ई-प्रोक्यूरमेंट निविदा सूचना

क्र./1021/स्टोर/2025 दिनांक 14.10.2025

नगर पालिक निगम कोरबा द्वारा शासकीय एवं अर्धशासकीय विभागों में व्यवसाय से संबंधित अनुभवी संस्थाओं/प्रदायकर्ताओं/निर्माताओं से आईटम दर पर ई-प्रोक्युरमेंट (E-Tendring) के माध्यम से निविदा आमंत्रित की जाती है:-

क्र.	कार्य का विवरण	अनुमानित लागत (रू. लाख में)	निविदा डालने की अंतिम तिथि
1.	फ्लेक्स बेनर प्रदाय एवं स्थापना हेतु वार्षिक दर निर्धारण (निगम मद)(प्रथम निविदा)	85.00	29.10.2025 (T.No.177605)

उपरोक्त निर्माण कार्यों की निविदा की जानकारी ई-प्रोक्योरमेंट वेब पोर्टल http://eproc.cgstate.gov.in से डाउनलोड की जा सकती है, साथ ही निगम के वेब साईट www.korbamunicipal.in पर भी देखी जा सकती है।

//स्वच्छ भारत निर्माण में योगदान दें//

अधीक्षण अभियंता
नगर पालिक निगम
कोरबा (छत्तीसगढ़)

अनमोल वचन......

शिक्षा सबसे सशक्त हथियार है जिससे दुनिया को बदला जा सकता है : नेल्सन मंडेला

गूगल का महा-निवेश

अमेरिका ने पेट्रोडॉलर समृद्ध पश्चिम एशियाई देशों के ऊर्जा एवं वित्त तथा भारत के टेक प्रशिक्षित मानव संसाधन को अपने एआई बौद्धिक संपदा से जोड़ कर इस नई तकनीक में खुद को अग्रणी बनाए रखने की बड़ी योजना बनाई है। गूगल भारत में आर्टिफिशिलय इंटेलिजेंस हब की स्थापना के लिए 15 बिलियन डॉलर का निवेश करेगी। इसके तहत विशाखापत्तनम में एक गिगावाट का डेटा सेंटर बनाया जाएगा। यह अमेरिका से बाहर एआई डेटा सेंटर बनाने की गूगल की योजना का हिस्सा है। इसके पहले माइक्रोसॉफ्ट और अमेजन भी भारत में डेटा सेंटर बनाने का एलान कर चुकी हैं, हालांकि उनके प्रस्तावित निवेश का स्तर गूगल से काफी कम है। अमेरिका की बड़ी टेक कंपनियों में फिलहाल एआई में निवेश की होड़ लगी हुई है। राष्ट्रपति डॉनल्ड ट्रंप ने खाड़ी देशों की अपनी पिछली यात्रा के दौरान अमेरिकी एआई परियोजना में पेट्रोडॉलर समृद्ध पश्चिम एशियाई देशों के ऊर्जा एवं वित्त तथा भारत के टेक प्रशिक्षित मानव संसाधन को अमेरिकी एआई बौद्धिक संपदा से जोड़ कर इस नई तकनीक में अपने देश को अग्रणी बनाए रखने की योजना घोषित की थी। इसके लिए विशाल पैमाने पर डेटा की जरूरत टेक कंपनियों को है। डेटा सेंटर की स्थापना ना सिर्फ महंगा कार्य है, बल्कि इसके लिए अत्यधिक ऊर्जा एवं उपकरणों को शीतलता देने के लिए शुद्ध जल की जरूरत होती है। इसका पर्यावरण पर खराब असर पड़ता है। तो अमेरिका ने अपने प्रभाव क्षेत्र वाले देशों की ऊर्जा उत्पादन क्षमता, जल उपलब्धता, वित्त एवं मानव संसाधन को अपनी परियोजना से जोड़ने का निर्णय लिया है। गौरतलब है कि विशाखापत्तनम में बनने वाले हब में अडानी ग्रुप और भारतीय एयरटेल का भी पैसा लगेगा। बेशक, इतने बड़े निवेश से भारत में विदेश मुद्रा आएगी। साथ ही रोजगार के अवसर पैदा होंगे। ये भारत के लिए फायदेमंद बातें हैं। मगर यह भी अवश्य ध्यान में रखना चाहिए कि ऐसी परियोजनाओं के साथ भारत लगातार अधिक मजबूती से अमेरिकी हाई टेक प्रतिमानों से जुड़ता जा रहा है। इससे भारत के अपनी जरूरतों के मुताबिक अपने प्रतिमान विकसित करने की संभावना सिकुड़ रही है। चूंकि अमेरिकी एआई उद्योग सेवा क्षेत्र पर केंद्रित है, तो भारत की मैनुफैक्चरिंग एवं सामाजिक जरूरतों के मुताबिक एआई तकनीक विकसित करने की संभावना ऐसे प्रतिमानों से नहीं बनेगी। उलटे सेवा क्षेत्र में एआई का उपयोग बढ़ेगा, जिससे वहां की मौजूद नौकरियों पर तलवार और ज्यादा लटकेगी।

राशिफल

मेष- मेष राशि के जातकों के लिए आज का दिन करियर में परिवर्तन लाने वाला साबित हो सकता है। विद्यार्थियों को किसी बड़ी उपलब्धि का संकेत मिलेगा और उन्हें भविष्य के लिए नई दिशा मिलेगी। पारिवारिक वातावरण में आनंद रहेगा और आप अपनों के साथ समय बिताकर सुकून महसूस करेंगे।

वृषभ- वृषभ राशि वालों को आज सेहत के क्षेत्र में राहत मिलेगी। पुरानी थकान और कमजोरी दूर होगी। आपकी दिनचर्या व्यवस्थित रहेगी, जिससे आप पूरे दिन ऊर्जावान महसूस करेंगे। हालांकि घर में खर्चों को लेकर थोड़ी चिंता रह सकती है और किसी योजनाबद्ध कटौती की आवश्यकता पड़ सकती है।

मिथुन- मिथुन राशि के लोगों को आज पारिवारिक रिश्तों में मजबूती मिलेगी। माता-पिता के साथ भावनात्मक संबंध बेहतर होंगे और जीवनसाथी से भी सहयोग प्राप्त होगा। हालांकि थोड़ी चिड़चिड़ाहट या ग़लतफहमी की स्थिति बन सकती है, जिससे घर का वातावरण प्रभावित हो सकता है।

कर्क- कर्क राशि के जातकों के लिए आज का दिन नई प्रेरणा और उपलब्धियों से भरा रहेगा। आप उत्साहित महसूस करेंगे और किसी बड़े प्रोजेक्ट को लेकर सकारात्मक कदम उठाएंगे। मीडिया या कंसल्टेंसी से जुड़े जातकों के लिए दिन काफी फलदायक रहेगा।

सिंह- सिंह राशि वालों के लिए आज घर में उल्लास और सक्रियता का वातावरण रहेगा। नजदीकी रिश्तेदारों के आगमन से पारिवारिक मेल-मिलाप बढ़ेगा। बच्चों के साथ समय बिताना सुखद अनुभव देगा और रिश्तों में नई ऊर्जा भर देगा। मानसिक एकाग्रता बनी रहेगी, जिससे आप अटके हुए कार्यों को पूरा करने में सक्षम रहेंगे। पुराने मतभेदों को आज आप पीछे छोड़ सकते हैं।

कन्या- कन्या राशि के जातकों के लिए आज का दिन मिश्रित रहेगा। किसी पारिवारिक समस्या का समाधान संभव है, जिससे मन का तनाव कम होगा। कामकाज में गंभीरता और अनुशासन आवश्यक रहेगा।

तुला- तुला राशि वालों के लिए दिन की शुरुआत थोड़ी धीमी हो सकती है लेकिन दोपहर बाद परिस्थितियां आपके पक्ष में आ जाएंगी। कार्यक्षेत्र में आपकी योग्यता की सराहना होगी और आप किसी महत्वपूर्ण कार्य में अग्रणी भूमिका निभा सकते हैं।

वृश्चिक- वृश्चिक राशि के जातकों के लिए आज का दिन लाभदायक सिद्ध होगा। आप अपनी ऊर्जा का सही दिशा में उपयोग कर पाएंगे। आध्यात्मिक गतिविधियों में रुचि बढ़ेगी और किसी धार्मिक स्थल पर जाने की संभावना भी बन सकती है। व्यवसाय में थोड़ी सुस्ती रहेगी लेकिन कर्मचारियों का सहयोग संतोषजनक रहेगा। आत्मिक संतुलन बना रहेगा।

धनु- धनु राशि के जातकों के लिए आज का दिन उन्नति देने वाला रहेगा। नौकरी या व्यापार में प्रमोशन या विस्तार का योग है। आप नई उपलब्धियों को प्राप्त करेंगे और अपनी पहचान मजबूत बनाएंगे। जीवनसाथी से मधुर संबंध बने रहेंगे। ध्यान रहे कि भावुकता में निर्णय न लें, विशेष रूप से वित्तीय मामलों में। सफलता के साथ थोड़ी विनम्रता भी आवश्यक होगी।

मकर- मकर राशि वालों के लिए आज का दिन आत्मविश्वास से भरपूर रहेगा। कार्यक्षेत्र में आपकी मेहनत रंग लाएगी और किसी रुके हुए प्रोजेक्ट को गति मिलेगी। वरिष्ठों की सलाह से बड़ा निर्णय ले सकते हैं। प्रेम जीवन में भी सकारात्मकता बनी रहेगी। किसी प्रिय के साथ समय बिताने का मौका मिलेगा, जिससे मानसिक सुकून प्राप्त होगा।

कुंभ- कुंभ राशि वालों के लिए आज राहत और शुभ समाचार का दिन है। किसी लंबे समय से रुके हुए कार्य की शुरुआत हो सकती है। विदेश से संबंधित कोई अच्छी खबर मिलेगी या यात्रा की योजना बनेगी। कार्यक्षेत्र में आप अपने व्यवहार से सभी का दिल जीतेंगे। हालांकि निवेश करने से पहले वरिष्ठों की राय लेना जरूरी होगा।

मीन- मीन राशि के लिए आज का दिन संतुलित और सामंजस्यपूर्ण रहेगा। आप दिनचर्या को व्यवस्थित रूप से अपनाएंगे और कार्यों में पूरी निष्ठा दिखाएंगे। परिवार के साथ कोई मनोरंजक योजना बन सकती है, जिससे घर में खुशी का माहौल रहेगा। व्यवसायिक मामलों में किसी अनुभवी व्यक्ति का मार्गदर्शन लाभ देगा।

हम वैश्विक तबाही की ओर बढ़ रहे हैं

//श्रुति व्यास//

हम खतरनाक समय में जी रहे हैं! और यह न रूपक में, न मनोदशा में, बल्कि मापी जा सकने वाली सच्ची बात है। यह किसी हेडलाइन या चिंता से उपजी अतिशयोक्ति नहीं है। यह विज्ञान है। मानवता अब आत्मविनाश के कितने करीब पहुँच चुकी है, इसका प्रतीक डूम्सडे क्लॉक का इस साल 89 सेकंड पर टिकना है, आधी रात के, यानी विनाश के, सबसे नज़दीक। 'बुलेटिन ऑफ द एटॉमिक साइंटिस्ट्स' के वैज्ञानिकों और नोबेल विजेताओं की समिति ने यह समय इस साल आगे बढ़ाया, इस चेतावनी के साथ कि दुनिया अब परमाणु दुस्साहस, जलवायु अराजकता, तकनीकी अतिरेक और भ्रामक सूचनाओं के दलदल में डूब रही है।

उनके शब्दों में – हम वैश्विक तबाही की ओर बढ़ रहे हैं – रूपक रूप में नहीं, बल्कि नापने योग्य रूप में।

और यह सब दिखता है। मौसम पागल हो चुका है। इस साल भारत ने ही काफी तबाही झेली, पहाड़ काँपने लगे हैं, नदियाँ विद्रोह कर रही हैं, और शहर अपनी ही महत्वाकांक्षा में घुट रहे हैं।

धरती को इतना खोदा जा चुका है कि ज़मीन अब खोखली महसूस होती है। यहाँ तक कि आसमान भी बदल गया है अब वह शांत, दार्शनिक नीला नहीं जो कभी हमें ठहरकर ऊपर देखने को मजबूर करता था। वह नीला अब जलता है, धुंध और ताप से धुँधला हुआ, जैसे क्षितिज पर खुद प्रकृति ने चेतावनी लिख दी हो।

लेकिन पतन सिर्फ़ प्राकृतिक नहीं है, वह राजनीतिक भी है और डरावनी बात यह है कि वह लोकतांत्रिक भी है। आज दुनिया की अव्यवस्था केवल तानाशाहों की बनाई नहीं है, उसे लोकतंत्रों ने भी मिलकर गढ़ा है, और शायद परिष्कृत भी किया है। जो देश कभी अंतरराष्ट्रीय नैतिकता के स्थापक थे, वे अब अपने ही घरों में उसे तोड़ रहे हैं। वे संस्थाएँ, जो सत्ता के अतिरेक से नागरिकों की रक्षा के लिए बनी थीं – संसदें, अदालतें, मीडिया, विश्वविद्यालय – वे सब राजनीतिक दबाव या जन-थकान के बोझ तले चरमराने लगी हैं। लोकतंत्रों के पुराने checks and balances अब संतुलन नहीं बनाते।

वॉशिंगटन में, शासन पार्टीगत नाटक बन गया है। नई दिल्ली में, असहमति को देशद्रोह समझ लिया जाता है। यरूशलम में, न्यायपालिका एक व्यक्ति की इच्छा के आगे झुक जाती है। हमारे समय की अव्यवस्था अब सिर्फ़ वैश्विक नहीं, संस्थागत भी है, प्रणालीगत और आत्मनिर्मित। जो शुरुआत लोकतंत्र के क्षरण से हुई थी, वह अब उसके नए रूप में कठोर हो चुकी है – performative populism यानी प्रदर्शनकारी जनवाद। अब सत्ता चुपचाप नहीं चलाई जाती, उसे रोज़ मंचित किया जाता है टीवी पर, सोशल मीडिया पर, रैलियों में। और जो संस्थाएँ सवाल उठाने के लिए बनी थीं, उन्हें हास्यास्पद बनाकर अप्रासंगिक किया जा रहा है। संयुक्त राष्ट्र की अनदेखी की जाती है, अंतरराष्ट्रीय संधियाँ कमजोर कर दी गई हैं, और मानवाधिकार अब केवल औपचारिकता बनकर रह गए हैं।

जो व्यवस्था के रक्षक थे, वही अब उसे अस्थिर करने वाले बन गए हैं, शक्ति और सुविधा की भाषा में क़ानून को फिर से लिखा जा रहा है।

इस बीच, महाद्वीपों के पार 110 सशस्त्र संघर्ष चल रहे हैं, द्वितीय विश्व युद्ध के बाद सबसे ज़्यादा। सिर्फ़ एशिया में ही 21 युद्ध सक्रिय हैं, भारत और पाकिस्तान की पुरानी वैर-दृष्टि, भारत और चीन की जमी हुई सीमाएँ, पाकिस्तान और अफ़ग़ानिस्तान का नया तनाव।

ये दूर की जंगें नहीं हैं, यह पड़ोसियों के बीच की लड़ाइयाँ हैं, नदियों, सीमाओं, गर्व और स्मृति के नाम पर।

1990 के दशक का जो शांति लाभांश था, वह अब पूरी तरह उड़ चुका है। युद्ध फिर लौट आया है भाषा बनकर, नीति बनकर, विचारधारा बनकर। यहाँ तक कि यूरोप, जिसने दावा किया था कि उसने अपने युद्धों को बीसवीं सदी के मलबे के नीचे दफना दिया है, अब फिर लहूलुहान है। रूस का यूक्रेन पर आक्रमण उस भ्रम को तोड़ चुका है कि युद्ध अब इतिहास हैं। और पश्चिम एशिया तो मानो हमेशा जलता रहता है – ग़ाज़ा, लेबनान, ईरान, यमन – एक संघर्ष पर दूसरा संघर्ष, जब तक विनाश सामान्य नहीं लगने लगता।

हर मोर्चा दूसरे को ईंधन देता है। हर युद्धविराम एक intermission जैसा लगता है, अंत नहीं।

और इस अराजकता के बीच मंच पर आते हैं वे पुरुष – डोनाल्ड ट्रंप, नरेंद्र मोदी, बेंजामिन नेतन्याहू, व्लादिमीर पुतिन, रेचेप तैयप एर्दोगन – और उनके जैसे बाकी सब। हर कोई अपने-अपने तूफ़ान का उत्पाद है, पर मिलकर वे शक्ति का एक पैटर्न रचते हैं। वे व्यवस्था को शांत करने नहीं, नियंत्रित करने आते हैं। संस्थाएँ पुनर्निर्मित करने नहीं, उन्हें अपने प्रतिबिंब में ढालने। वे सब एक ही कोरियोग्राफ़ी में चलते हैं, यह भ्रम कि अव्यवस्था को करिश्मे से संचालित किया जा सकता है, कि कानून लोचदार है, और व्यवस्था उसी की है जो उसे फिर से परिभाषित करने का साहस रखता है। उनका उभार राष्ट्रों की ताक़त नहीं, नागरिकों की थकान का प्रमाण है, ऐसी जनता की, जो अस्थिरता से इतनी थक चुकी है कि वर्चस्व को ही नियति मान बैठी है। हमारे समय की त्रासदी यही है, पुराने नियम अब लागू नहीं, और कोई उनके लौटने को लेकर nostaligic भी नहीं। 1945 के बाद जो व्यवस्था नैतिक पुनर्निर्माण के आधार पर बनी थी, उसका भार अब खत्म हो चुका है। हम अब ऐसी दुनिया में रहते हैं जहाँ नैतिक ज्यामिति नहीं, बल्कि एल्गोरिद्म का हिसाब चलता है। जहाँ आक्रोश भी प्रतिस्पर्धा है, और स्मृति हर न्यूज़ साइकिल के साथ रीसेट हो जाती है।

बीसवीं सदी में दानव थे, लेकिन अपराधबोध भी था। इक्कीसवीं सदी ने तमाशे को पूर्णता दी है। और फिर भी, इतिहास घूमकर वहीं आ गया है। जिस सदी को डिजिटल और लोकतांत्रिक होना था, वह अब मध्यकालीन लगती है, असमानताओं में सामंती, राजनीति में सांप्रदायिक, और नेतृत्व में निरंकुश। दुनिया का नक्शा प्रगति से ज़्यादा पतन जैसा दिखता है, सीमाएँ कठोर, पड़ोसी शत्रु, और राष्ट्र धर्म, पहचान, और भय को हथियार बनाते हुए।

इतिहास बताता है कि लगभग हर बड़ा युद्ध पड़ोसियों के बीच लड़ा गया। हम फिर उसी खतरनाक नज़दीकी में पहुँच चुके हैं। इस युग का सबसे बड़ा ख़तरा युद्धों की संख्या नहीं, बल्कि उनके प्रति हमारी सहजता है। कभी कहा गया था दुनिया का अंत धमाके से नहीं, फुसफुसाहट से होगा। लेकिन अब शायद यह अंत अलग होगा खामोशी से नहीं, शोर से।

उस शोर से जो क्रोध का है, पर कर्म का नहीं; जो शक्ति का है, पर सिद्धांत का नहीं; उन नेताओं का, जो वर्चस्व को नियति समझ बैठे हैं। डूम्सडे क्लॉक इसलिए अब सिर्फ़ वैज्ञानिक चेतावनी नहीं, बल्कि मानवीय अहंकार का प्रतीक है। आज यह घड़ी आधी रात से 89 सेकंड दूर है। कल इसकी सुइयाँ फिर चलेंगी – आगे या पीछे – यह इस पर निर्भर करेगा कि हम क्या चुनते हैं। सत्य या प्रचार, संयम या प्रदर्शन, मानवता या अहंकार। क्योंकि हमारा संकट समय का नहीं है, वह बुद्धि का है।

ओवैसी की मोदी-मुहम्मद तुलना

//शंकर शरण//

ओवैसी ने अभी 6 अक्तूबर को बहादुरगंज की एक सभा में पूछा- अगर हम 'आई लव मुहम्मद' का पोस्टर लेकर चलें तो उसमें अवैध क्या है। इस का उत्तर है कि तसलीमा का कथन जब तक इस्लाम रहेगा, आतंकवाद रहेगा का पोस्टर लेकर चलना भी उतना ही वैध है। यानी, मुहम्मद की आलोचना उतना ही वैध है जितना मुहम्मद से मुहब्बत करना। दोनों अधिकार समान धरातल पर हैं। एक ही सिक्के के दो पहलू। जैसा तसलीमा ने कहा- कोई व्यक्ति आलोचना से ऊपर नहीं — न कोई मनुष्य, न कोई संत, न कोई मसीहा, न कोई प्रोफेट, न कोई गॉड। संसार को बेहतर बनाने के लिए आलोचनात्मक परीक्षण आवश्यक है।

गत 2 अक्तूबर को हैदराबाद में एम.आई.एम. नेता असदुद्दीन ओवैसी ने कहा- इस देश में 'आई लव मोदी' तो बोल सकते हैं, लेकिन 'आई लव मुहम्मद' नहीं बोल सकते। आप इस देश को कहाँ ले जा रहे हैं। यदि कोई कहे 'आई लव मोदी' तो मीडिया वाले भी खुश हो जाएंगे। मगर कोई 'आई लव मुहम्मद' बोले तो कहेंगे यह ठीक नहीं है।

निस्संदेह, प्रत्येक व्यक्ति को मोदी ही नहीं बल्कि मुहम्मद से भी मुहब्बत जताने की आजादी है। इसमें विवाद नहीं। पर यह तुलना गलत है। 'मुहम्मद से मुहब्बत' की उचित तुलना मोदी नहीं, बल्कि तसलीमा नसरीन या सलमान रुश्दी होते। क्या सब को तसलीमा नसरीन से भी वही मुहब्बत दर्शाने, 'आई लव तसलीमा' के पोस्टर लगाने की आजादी होनी चाहिए या नहीं। विशेषकर मुसलमानों को।

इस्लामी मूल ग्रंथों के अध्ययन करके, मुहम्मद के जीवन और कार्य के अनेक उदाहरण देकर अपने मार्मिक निबंध 'बिकॉज ऑफ रिलीजन' (2003) में तसलीमा इस निष्कर्ष पर पहुँचीं- मुहम्मद ने कुरान अपने स्वार्थ के लिए, अपनी सुविधा के लिए, अपने सुख के लिए लिखी थी। सो, इस्लाम का इतिहास जान कर वह उस से उदासीन हो गईं।

इसलिए सही तुलना यह होती। कि जैसे मोदी या मुहम्मद से प्रेम करने का अधिकार सभी भारतवासियों को है, वैसे ही मोदी और मुहम्मद की आलोचना करने का भी सब को अधिकार है। जैसा तसलीमा ने कहा- कोई व्यक्ति आलोचना से ऊपर नहीं – न कोई मनुष्य, न कोई संत, न कोई मसीहा, न कोई प्रोफेट, न कोई गॉड। संसार को बेहतर बनाने के लिए आलोचनात्मक परीक्षण आवश्यक है।

अतः जब तक हर भारतवासी यह बात रखने के अधिकार को भी स्वीकार नहीं करे, तब तक केवल मोदी या मुहम्मद पर केंद्रित रहना एकतरफा शिकायत होगी। ऐसा अधिकार कोई नहीं रख सकता जिस से वह दूसरों को वंचित करना चाहे। यदि ओवैसी किसी व्यक्ति या विचार से प्रेम रखने का अधिकार माँगते हैं, तो उन्हें समान रूप से स्वीकार करना होगा कि दूसरों को उसी व्यक्ति या विचार को नापसंद करने का भी अधिकार है। अन्यथा वह अपनी पसंद दूसरों पर थोपना हो जाएगा। चाहे वह मोदी हों या मुहम्मद।अभिव्यक्ति स्वतंत्रता एकतरफा नहीं हो सकती। वह भी एक ही विषय पर। जैसे, अभी 'आई लव मुहम्मद' विषय है। यहाँ 'आई डोन्ट लव मुहम्मद' भी कहने का वही खुला अधिकार होना चाहिए। मोदी या मुहम्मद, उन के बारे में केवल मीठी बातें कहने की अनुमति नहीं होनी चाहिए। महान लेखक जॉर्ज ऑरवेल की उक्ति प्रसिद्ध है- यदि स्वतंत्रता का कोई अर्थ है तो यही है कि लोगों को वह बात कहने का अधिकार हो जिसे वे सुनना नहीं चाहते। यानी, असुविधाजनक सत्य।

यही उक्ति 'आई लव मुहम्मद' को सही परिप्रेक्ष्य में रखती है। इस का सर्वाधिक उपयुक्त आधार मुहम्मद की प्रमाणिक जीवनी, सीरा है। (इब्न इशाक का 'सीरते रसूल अल्लाह', अंग्रेजी अनु. 'द लाइफ ऑफ मुहम्मद')। यह सर्व-प्रमाणिक ग्रंथ मुहम्मद के कथनों और कार्यों के विवरणों से भरा है। उसे पढ़कर असंख्य पाठक मुहम्मद के अनेक विचारों और कार्यों को प्रेम करने योग्य नहीं पा सकते। तसलीमा केवल उदाहरण हैं। उस के अलावा भी अनेक महत्वपूर्ण प्रश्न है – विशेषकर गैर-मुसलमानों (काफिरों) के प्रति मुहम्मद के राजनीतिक निर्देश। जो न्यायोचित मूल्यांकन की माँग करते हैं। इसलिए भी, क्योंकि विश्वभर में असंख्य मुस्लिम नेता, जहाँ भी उन्हें शक्ति या अवसर मिलता है, उन्हीं निर्देशों को लागू करने का प्रयास करते हैं। इसके अनेक उदाहरण भारत समेत दुनिया भर में हैं, जहाँ गैर-मुस्लिमों को उन निर्देशों की पीड़ा झेलनी पड़ती है। कश्मीरी पंडित और बंगाली हिन्दू तो वर्तमान उदाहरण हैं। पर मुहम्मद के उन निर्देशों के परीक्षण, मूल्यांकन को अधिकांश नेता दबाने की प्रवृत्ति रखते है।जैसे अभी ओवैसी कर रहे हैं, वे मुहम्मद से मुहब्बत की वैधता पर बल देते हैं, परंतु उन की आलोचना की उसी वैधता से इनकार करते हैं। यही असली समस्या है। इसे किसी समुदाय का 'फेथ' बताकर सुलझाया नहीं जा सकता। क्योंकि ठीक उलटे फेथ और समुदाय भी हैं। बुतशिकनी ही नहीं, बुतपरस्ती भी फेथ है। तब कैसे फैसला होगा।

इसलिए मानवता की दो आचार-संहिता नहीं हो सकती, जैसे एक मानव शरीर में दो हृदय नहीं रह सकते। मानवता का भाग होने के नाते मुसलमानों को वह स्वर्णिम नियम मानना होगा जो सभी मनुष्यों पर लागू है। दूसरों के साथ वैसा ही करो जैसा तुम चाहते हो कि वे तुम्हारे साथ करें।

इसलिए, एक ओवैसी को भी सहजता से उस स्वर्णिम नियम का पालन करना चाहिए जैसा तसलीमा नसरीन या सलमान रुश्दी करते हैं। किंतु राजनीतिक, कानूनी और नैतिक विषयों की एक पूरी श्रृंखला है, जिस पर अधिकांश मुस्लिम नेता विशेषाधिकार का अंदाज रखते हैं। वे अपने लिए ऊँचा और दूसरे के लिए नीचा व्यवहार रखते हैं – कानून ही नहीं, मानवीय नैतिकता से भी ऊपर। वे अन्य धर्मों और धर्म समुदायों के लिए अपमानजनक शब्दों का प्रयोग करते हैं। उन्हें 'कुफ्र' और उनके अनुयायियों को 'काफिर' कह कर। पूरी इस्लामी शब्दावली में इससे अधिक घृणित शब्द दूसरा नहीं! यह दिखाने के लिए अकेले कुरान ही काफी है। पर काफिरों को इस्लाम की आलोचना करने देने की स्वतंत्रता से अधिकांश मुस्लिम नेता इनकार करते हैं। कानूनी ही नहीं, नैतिक आधार पर भी!

यही सारी दुनिया में इस्लाम की मूल समस्या है। ओवैसी की एकतरफा शिकायत उसी का ताजा नमूना है। वे अपनी आजादी चाहते हैं, पर तसलीमा की छीनना चाहते हैं। तसलीमा या रुश्दी जैसे मुसलमानों की जान पर भी हमले होते हैं। क्योंकि वे मुहम्मद के बारे में असुविधाजनक लगने वाले तथ्य सामने लाते हैं। यह दो मापदंड एक मानव समाज कब तक झेल पाएगा। मुस्लिम नेताओं को इस प्रश्न का सामना करना बाकी है।इसीलिए, 'मुहम्मद से मुहब्बत' के सामने 'मोदी से मुहब्बत' रखना गलत और भ्रामक है। वास्तविक तुलना 'मुहम्मद से मुहब्बत' और 'रुश्दी से मुहब्बत' की होनी चाहिए। दोनों मनुष्य हैं। चाहे, ऐतिहासिक ही सही।

वस्तुतः मुहम्मद के ही सन्दर्भ में रुश्दी भी एक ऐतिहासिक हस्ती बन चुके हैं। उन्होंने कुरान की 'शैतानी आयतों' के असुविधाजनक प्रश्न को केंद्र में ला दिया। जो इस्लाम में शुरू से मौजूद रहा है। रुश्दी द्वारा दिए गये तथ्य मूल इस्लामी स्रोतों से ही लिए गये हैं। रुश्दी ने कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय में इस्लाम का भी विशेष अध्ययन किया था।

वास्तव में, रुश्दी के विरुद्ध खुमैनी के फतवे ने उस प्रश्न को हजार गुना अधिक प्रचारित कर दिया जिसे रुश्दी ने परोक्ष रूप से उठाया था। परंतु वह फतवा, और हालिया हमला जिसमें रुश्दी अपंग हो गए, उस प्रश्न को खत्म न कर सका! ईमामों, अयातुल्लाओं और मुस्लिम नेताओं, संगठनों, तंजीमों की पूरी फौज भी रुश्दी द्वारा उठाए गए उस एक मासूम सवाल का जवाब नहीं दे सकी, जो मुहम्मद के बारे में की गई थी।

वह प्रश्न यह था। यदि मुहम्मद ने खुद ही कहा कि कुछ आयतें अल्लाह की नहीं, बल्कि शैतान की प्रेरणा से उनके मुँह से निकली थीं, इसलिए वे कुरान से हटा दी गईं – तो क्या गारंटी है कि ऐसा कुछ अन्य आयतों के साथ भी नहीं हुआ होगा। यह रुश्दी ने रूपक में पूछा था, बिना इस्लामी ग्रंथों के असली पात्रों का नाम लिए। किन्तु पैंतीस साल पहले इतना भी मुस्लिम नेताओं को मंजूर न था!

आज तो अनगिनत मुस्लिम लेखक – तसलीमा, वफा सुल्तान, अय्यान सिरसी अली, आदि – मुहम्मद पर और भी सीधे प्रश्न उठा रहे हैं। किंतु नाराजगी, धमकी और हिंसा के अलावा मुस्लिम नेताओं के पास कोई जवाब नहीं। यह स्थिति अधिक दिन नहीं रह सकती। ओवैसी जैसे बौद्धिक नेताओं को इसे न्यायसंगत रूप से देखना होगा। चुनी हुई नाराजगी और शिकायत अब काम नहीं करेगी। शिकायत और नाराजगी दूसरों को भी है। वास्तव में, वैसे प्रश्न नए भी नहीं, जो रूशदी या तसलीमा ने उठाए हैं। बहुत से मक्कावासियों ने वही सवाल मुहम्मद से भी पूछे थे। वे उत्तर नहीं दे सके और केवल तलवार से सभी सवालों का निपटारा किया। यह सब उन की जीवनी में विस्तार से लिखा मिलता है। अब चौदह सदियों बाद भी, उसी तरीके की सीमा है। जैसा कि रुश्दी और तसलीमा के मामले में भी देखा गया।

तस्वीरों की दुनिया

भारत के उपराष्ट्रपति और राज्यसभा के सभापति श्री सी. पी. राधाकृष्णन ने नई दिल्ली में उपराष्ट्रपति एन्क्लेव में छत्तीसगढ़ के राज्यपाल श्री रमेन डेका से मुलाकात की।

भारत के उपराष्ट्रपति और राज्यसभा के सभापति श्री सी. पी. राधाकृष्णन ने नई दिल्ली में उपराष्ट्रपति एन्क्लेव में त्रिपुरा के मुख्यमंत्री प्रो. (डॉ.) माणिक साहा से मुलाकात की।

केंद्रीय रक्षा मंत्री, श्री राजनाथ सिंह पुणे में सिम्बायोसिस स्किल्स एंड प्रोफेशनल यूनिवर्सिटी में स्कूल ऑफ डिफेंस एंड एयरोस्पेस टेक्नोलॉजी के उद्घाटन के अवसर पर संबोधित करते हुए।

केंद्रीय रक्षा मंत्री, श्री राजनाथ सिंह पुणे में सिम्बायोसिस स्किल्स एंड प्रोफेशनल यूनिवर्सिटी में स्कूल ऑफ डिफेंस एंड एयरोस्पेस टेक्नोलॉजी के उद्घाटन के अवसर पर एक समूह तस्वीर में।

आंध्र प्रदेश के श्रीशैलम में आगमन पर भव्य रोड शो के दौरान उत्साही भीड़ द्वारा प्रधानमंत्री का गर्मजोशी से स्वागत किया गया।

प्रधानमंत्री आंध्र प्रदेश के श्रीशैलम में श्री शिवाजी ध्यान मंदिर और श्री शिवाजी दरबार हॉल का दौरा करते हुए।

केंद्रीय गृह और सहकारिता मंत्री, श्री अमित शाह नई दिल्ली में केंद्रीय जांच ब्यूरो (सीबीआई) द्वारा आयोजित भगोड़ों का प्रत्यर्पण चुनौतियां और रणनीतियां पर सम्मेलन में भाग लेते हुए।

पीके का मास्टरस्ट्रोक: राजद से तोड़ सरफराज को लाए जनसुराज में

बोले- राघोपुर में तेजस्वी को धकेलेंगे तीसरे स्थान पर

पटना, 17 अक्टूबर [एजेंसी]।

पूर्व सांसद व जोकीहाट से चार बार विधायक रहे सरफराज आलम ने गुरुवार को राष्ट्रीय जनता दल (राजद) छोड़ जन सुराज पार्टी (जसुपा) का दामन थाम लिया। पार्टी के सूत्रधार प्रशांत किशोर के साथ राष्ट्रीय अध्यक्ष उदय सिंह और प्रदेश अध्यक्ष मनोज भारती ने पार्टी में उनका स्वागत किया। उनके साथ आने से पीके ने सीमांचल में जसुपा को लाभ होने की आशा जताई है। इसी के साथ उन्होंने कहा कि महागठबंधन को तो यह स्पष्ट करना चाहिए कि मुकेश सहनी उनके साथ हैं या नहीं। बिना एक भी सीट पर चुनाव लड़ने की आधिकारिक घोषणा किए उन्होंने उप मुख्यमंत्री बनने का दावा कर दिया है। इस बार महागठबंधन ने तो करोड़ों रुपये में टिकटों की बिक्री की है। कई जगहों पर महागठबंधन के दो-दो दलों ने प्रत्याशी दे दिए हैं। एक प्रश्न के उत्तर में उन्होंने कहा कि मुझे राघोपुर से चुनाव नहीं लड़ाने का निर्णय पार्टी ने लिया है, ताकि बाकी प्रत्याशियों की सहायता कर सकूं। तेजस्वी यादव और उनका पूरा परिवार मिलकर भी मुझको नहीं डरा सकता है।आप देखिएगा, राघोपुर में उनको तीसरे नंबर पर धकेल देंगे। सरफराज ने कहा कि मैं लंबे अरसे से घुटन महसूस कर रहा था। अब प्रशांत किशोर के साथ मिलकर बिहार में बदलाव के लिए संघर्ष करूंगा। सरफराज पूर्व केंद्रीय मंत्री व सीमांचल की राजनीति के बड़े मुस्लिम चेहरे रहे तस्लीमुद्दीन के पुत्र हैं।

पाकिस्तानी बलों ने खैबर पख्तूनख्वा में की बमबारी, तालिबान समर्थित दर्जनों लड़ाके मारे गए

इस्लामाबाद, 17 अक्टूबर [एजेंसी]।

पाकिस्तानी बलों ने गुरुवार को अपने खैबर पख्तूनख्वा प्रांत के मोहमंद जिले में कार्रवाई कर तालिबान समर्थित दर्जनों लड़ाकों को मारा है लेकिन उसके बारे में कोई औपचारिक बयान नहीं दिया है।जबकि अफगानिस्तान की तालिबान सरकार ने कहा है कि बुधवार को संघर्षविराम लागू होने से ठीक पहले पाकिस्तान ने काबुल में दो ड्रोन हमले किए। यह हमला उसकी कुत्सित सोच को प्रदर्शित करता है। इसके बावजूद अफगानिस्तान सरकार पाकिस्तान से वार्ता करेगी और टकराव वाले मुद्दों को सुलझाने का प्रयास करेगी।इस बीच संयुक्त राष्ट्र ने दोनों देशों के बीच संघर्षविराम का स्वागत किया है। 10 अक्टूबर को काबुल पर पाकिस्तान के हवाई हमले के बाद दोनों देशों के बीच कई दौर में टकराव हुआ जिसमें दर्जनों लोग मारे गए और सैकड़ों घायल हुए हैं।काबुल पुलिस प्रमुख के प्रवक्ता खालिद जादरान ने बताया कि पाकिस्तानी ड्रोन हमले बुधवार को दोपहर बाद हुए। पहले ड्रोन ने एक आवासीय भवन को निशाना बनाया जबकि दूसरे ड्रोन से बाजार में हमला हुआ। नजदीकी अस्पताल ने बताया है कि इन हमलों में पांच लोग मारे गए और दर्जनों घायल हुए हैं। घायलों को इलाज के लिए अस्पताल लाया गया है जबकि मृतकों के शव अस्पताल लाए गए हैं। हमले के समय ही काबुल में एक ऑयल टैंकर में विस्फोट की सूचना है लेकिन यह पुष्टि नहीं हुई है कि यह विस्फोट पाकिस्तानी हमले से हुआ। 2021 में अफगानिस्तान की सत्ता को दोबारा संभालने वाली तालिबान सरकार का पाकिस्तानी सेना से पहली बार इतना भीषण टकराव हुआ है।दोनों देशों के बीच संघर्षविराम सऊदी अरब, कतर और कुछ अन्य देशों के अनुरोध पर हुआ है। संघर्षविराम के बाद दोनों देशों की सीमाओं पर शांति है। अफगानिस्तान में कार्यरत संयुक्त राष्ट्र के कार्यालय ने बताया है कि अफगानिस्तान के सीमावर्ती स्पिन बोल्डक इलाके में हाल के पाकिस्तानी हमलों में 17 नागरिक मारे गए और 346 घायल हुए हैं। इससे पहले की लड़ाई में अफगानिस्तान के विभिन्न प्रांतों में 16 नागरिकों की मौत हुई है।

बंगाल में एसआइआर को लेकर बीएलओ को मिल रहीं धमकियां, पत्र लिख केंद्रीय बलों की सुरक्षा की मांग की

कोलकाता 17 अक्टूबर। बंगाल में मतदाता सूची के विशेष गहन पुनरीक्षण (एसआईआर) की प्रक्रिया अभी शुरू भी नहीं हुई और इस काम में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने जा रहे बूथ स्तरीय अधिकारियों (बीएलओ) को धमकियां मिलनी शुरू हो गई हैं। बीएलओ के एक वर्ग ने इलेक्टोरल वर्कर्स यूनिटी फोरम के बैनर तले बंगाल के मुख्य चुनाव अधिकारी (सीईओ) मनोज अग्रवाल को पत्र लिखकर इसकी शिकायत की है। उन्होंने कहा कि मतदाता सूची में फर्जी लोगों के नाम शामिल कराने के लिए उन्हें धमकाया जा रहा है। बीएलओ ने सीईओ से एसआईआर के काम के लिए उन्हें केंद्रीय बलों की सुरक्षा मुहैया कराने की मांग की है। बीएलओ का काम घर-घर जाकर लोगों को एसआइआर के तहत मतदाता सूची में नाम शामिल कराने के लिए भरने को फार्म देना है। एक बीएलओ ने कहा कि कुछ लोगों ने उन्हें धमकाते हुए कहा है कि उनके पास आधार कार्ड हैं।

ट्रंप को बड़ा झटका, अमेरिका में संघीय कर्मचारियों की बर्खास्तगी पर कोर्ट ने लगाई रोक

वाशिंगटन 17 अक्टूबर। अमेरिका के एक संघीय न्यायाधीश ने शटडाउन के दौरान ट्रंप प्रशासन को संघीय कर्मचारियों को बर्खास्त करने से अस्थायी रूप से रोक दिया है। कैलिफोर्निया के उत्तरी जिले के लिए अमेरिकी जिला न्यायालय की न्यायाधीश सुसान यवोन इल्स्टन ने बुधवार को अस्थायी आदेश जारी करते हुए कहा कि ट्रंप प्रशासन की गतिविधियां अवैध हैं। यह आदेश तब आया जब प्रशासन ने चार हजार से अधिक संघीय कर्मचारियों को नौकरी से निकालने के नोटिस भेजे थे। सरकारी कर्मचारियों का प्रतिनिधित्व करने वाली दो प्रमुख यूनियनों ने छंटनी रोकने के लिए याचिका दायर की थी। इल्स्टन ने कहा कि प्रशासन ने सरकारी खर्च और सरकारी कामकाज में कमी का फायदा उठाया है। जज ने न केवल प्रशासन द्वारा हाल ही में घोषित छंटनी को, बल्कि भविष्य में इसी तरह की अन्य छंटनियों को भी अस्थायी रूप से रोक दिया। इस फैसले ने राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप को शुरुआती कानूनी झटका दिया, जिन्होंने वित्तीय गतिरोध का फायदा उठाकर संघीय कर्मचारियों की संख्या में कटौती करने की कोशिश की थी। इस बीच वित्त मंत्रालय का कहना है कि शटडाउन से अमेरिकी अर्थव्यवस्था को प्रति सप्ताह 15 अरब डालर का नुकसान हो सकता है। रॉयटर के अनुसार ट्रंप प्रशासन आतंकवाद रोकथाम फंड को डेमोक्रेटिक नेतृत्व वाले राज्यों से रिपब्लिकन नेतृत्व वाले राज्यों में स्थानांतरित करने की योजना बना रहा है। वाशिंगटन डी.सी. और इलिनोइस में सबसे अधिक प्रतिशत की फंडिंग कटौती देखी गई है। डेमोक्रेटिक नेतृत्व वाले 12 राज्यों का आरोप है कि ट्रंप प्रशासन उन्हें दंडित करने का प्रयास कर रहा है। डेमोक्रेटिक पार्टी समर्थक वाशिंगटन, डी.सी., इलिनाय और न्यूजर्सी में भारी गिरावट देखी गई। वाशिंगटन में कुल कटौती 70 प्रतिशत, इलिनाय में 69 प्रतिशत और न्यू जर्सी में 49 प्रतिशत की कमी आई।

समुद्री क्षेत्र में बढ़ रहे साइबर खतरे, निपटने के लिए नौसेना ने आयोजित किया सेमिनार

नईदिल्ली, 17 अक्टूबर [एजेंसी]।

भारतीय नौसेना ने गुरुवार को समुद्री क्षेत्र में साइबर खतरों की समझ विकसित करने और राष्ट्रीय साइबर सुरक्षा स्थिति को मजबूत करने के लिए मुख्य हितधारकों के बीच सहयोग को बढ़ावा देने के उद्देश्य से एक सेमिनार आयोजित किया। साइबर हमलों का समुद्री क्षेत्र पर प्रभाव और राष्ट्रीय सुरक्षा एवं अंतरराष्ट्रीय संबंधों पर इसके प्रभाव शीर्षक से, यह सेमिनार सुषमा स्वराज भवन में आयोजित किया गया। नौसेना प्रमुख एडमिरल दिनेश के त्रिपाठी ने कहा कि भारत के आर्थिक और सुरक्षा लक्ष्यों के लिए सरकार समुद्री क्षेत्र पर विशेष ध्यान दे रही है।यही वजह है कि समुद्र से समृद्धि के दृष्टिकोण के तहत, भारत के समुद्री विकास को सागर अमृत काल दृष्टि 2047, सागरमाला और पीएम गति शक्ति जैसे पहलों द्वारा निर्देशित किया जा रहा है।नौसेना प्रमुख ने सभी समुद्री प्रणालियों में साइबर सुरक्षा को प्रारंभ से ही समाहित करने और हितधारकों के बीच त्वरित सूचना साझा करने के लिए समन्वय को मजबूत करने की आवश्यकता पर भी जोर दिया।इस अवसर पर इलेक्ट्रानिक्स और सूचना प्रौद्योगिकी, वाणिज्य और उद्योग राज्य मंत्री जितिन प्रसाद ने मुख्य भाषण दिया।

उन्होंने समुद्री क्षेत्र की सुरक्षा में साइबर सुरक्षा के बढ़ते महत्व और एक मजबूत, लचीला और उत्तरदायी समुद्री साइबर रक्षा आर्किटेक्कर बनाने की हमारी जिम्मेदारी पर जोर दिया। रक्षा मंत्रालय ने एक बयान में कहा कि यह कार्यक्रमश्च समुद्री क्षेत्र में साइबर खतरों की समझ विकसित करने और राष्ट्रीय साइबर सुरक्षा स्थिति मजबूत करने के लिए मुख्य हितधारकों के बीच सहयोग को बढ़ावा देने के उद्देश्य से आयोजित किया गया था।

ग्रेटर नोएडा में पुलिस की कार्रवाई मस्जिद बनाने को लेकर चंदे के 12 लाख रुपये हड़पने वाला वांछित गिरफ्तार

ग्रेटर नोएडा। बीटा दो कोतवाली पुलिस ने 12 लाख 38 हजार रुपये हड़पने के षडयंत्र में शामिल वांछित चल रहे एक आरोपित को गिरफ्तार किया है। आरोपित की पहचान नाथ दिल्ली थाना लाहौरी गेट का सिमजान बल्ली मारान निवासी शैय्यद नवेद फैसल उर्फ बाबी के रूप में हुई है। वह लंबे समय में वांछित चल रहा था। बाबी पर आरोप था कि उसने अपने साथियों के साथ मिलकर धोखाधड़ी से कूट रचित दस्तावेज तैयार कर मस्जिद बनाने को लेकर चंदे के 12 लाख 38 हजार रुपये बैंक में जमा न करके हड़प लिए थे। पांच अक्टूबर को आरोपित के खिलाफ मामला दर्ज कराया गया था। मामला दर्ज हो जाने के बाद आरोपित फरार हो गया था।

मां वैष्णो देवी में नहीं पहुंच रही श्रद्धालुओं की भीड़, पिट्ठू-पालकी वाले हुए निराश

कटरा, 17 अक्टूबर [एजेंसी]।

त्योहारी सीजन के चलते देशभर से मां वैष्णो देवी के लिए बहुत कम संख्या में श्रद्धालु के आधार शिविर कटड़ा पहुंच रहे हैं। इसके चलते कटड़ा व भवन सूना हो गया है। भवन मार्ग पर घोड़ा, पिट्ठू तथा पालकी मजदूर भी श्रद्धालुओं का इंतजार करते नजर आ रहे हैं। उम्मीद की जा रही है कि दीपावली के बाद मां वैष्णो देवी की यात्रा में बढ़ोतरी होगी। वर्तमान में मां वैष्णो देवी की यात्रा कर रहे श्रद्धालुओं को किसी भी तरह की परेशानी का सामना नहीं करना पड़ रहा है और सभी सुविधाएं उपलब्ध हो रही हैं। श्रद्धालु मां वैष्णो देवी के दिव्य दर्शन कर खुद को सौभाग्यशाली मान रहे हैं। मां वैष्णो देवी के दर्शन करने के बाद भवन पर रोपवे केबल कार में सवार होकर भैरव घाटी पहुंचकर बाबा भैरवनाथ के चरणों में हाजिरी लगा रहे हैं।गुरुवार को दिनभर मौसम साफ रहा और धूप खिली रही, लेकिन ठंडी हवा चलती रही, जिससे हल्की ठंड का अहसास हुआ। शाम छह बजे तक 7100 श्रद्धालु पंजीकरण करवरकर भवन की ओर रवाना हो चुके थे और इक्का-दुक्का श्रद्धालुओं का आना जारी है।

यूपी में बढ़ाई जाए पर्यटकों के ठहरने की सुविधा जयवीर, होम स्टे शुल्क कम करने के दिए निर्देश

लखनऊ। पर्यटन मंत्री जयवीर सिंह ने कहा है कि राज्य की अर्थव्यवस्था को एक ट्रिलियन डालर की अर्थव्यवस्था बनाने में पर्यटन विभाग का योगदान सबसे अहम होगा। इसके लिए जरूरी है कि राज्य में आने वाले पर्यटकों को ज्यादा से ज्यादा दिनों तक रोका जाए। पर्यटकों के ठहरने की सुविधा बढ़ाई जाए, जिससे उन्हें रुकने में कोई परेशानी न हो।साथ ही पर्यटकों से कमरों के लिए ज्यादा राशि न ली जाए। उन्होंने होम स्टे के लिए निर्धारित किए गए दो से तीन हजार रुपये को कम किए जाने के निर्देश दिए। पर्यटन भवन में डेलायट कंपनी द्वारा पर्यटन के क्षेत्र को लेकर तैयार की रिपोर्ट की उन्होंने समीक्षा की। कहा कि जरूरत हो तो होम और बेड एंड ब्रेक फास्ट नीति में संशोधन किया जाए। बैठक में प्रमुख सचिव अमृत अभिजात व महानिदेशक राजेश कुमार द्वितीय सहित अन्य अधिकारी उपस्थित थे।अयोध्या में 19 अक्टूबर को आयोजित होने वाले दीपोत्सव को लेकर ग्रामीण महिलाओं ने पांच लाख दिये तैयार किए हैं। इन महिलाओं को पर्यटन विभाग की पहल पर प्रशिक्षित किया गया है। इनके द्वारा तैयार दियों से ग्रामीण अर्थव्यवस्था की लौ रोशन होगी।पर्यटन मंत्री जयवीर सिंह ने बताया कि महिला सशक्तिकरण को बढ़ावा देने के लिए इस बार ग्रामीण महिलाओं के हाथों से बने दीयों से रामनगरी जगमगाएगी। इन दीयों की चमक न केवल दीपोत्सव की दिव्यता को और बढ़ाएगी, बल्कि ग्रामीण महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने में भी महत्वपूर्ण योगदान देगी।अयोध्या के गौराछार, रामपुरवा और बाराबंकी जिले के भगहर झील क्षेत्र के गांवों की महिलाओं राम कथा पार्क में अपने दीयों और हस्तशिल्प उत्पादों की बिक्री के लिए निश्शुल्क स्टाल प्रदान किए गए हैं।

मेडागास्कर में आज राष्ट्रपति पद की शपथ लेंगे कर्नल माइकल, विरोधी प्रदर्शनों के बाद सेना ने हाथ में ले ली थी सत्ता

एंटानानारिवो, 17 अक्टूबर [एजेंसी]।

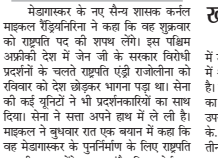

मेडागास्कर के नए सैन्य शासक कर्नल माइकल रैंड्रियनिरिना ने कहा कि वह शुक्रवार को राष्ट्रपति पद की शपथ लेंगे। इस पश्चिम अफ्रीकी देश में जेन जी के सरकार विरोधी प्रदर्शनों के चलते राष्ट्रपति एंड्री राजोलीना को रविवार को देश छोड़कर भागना पड़ा था। सेना की कई यूनिटों ने भी प्रदर्शनकारियों का साथ दिया। सेना ने सत्ता अपने हाथ में ले ली है। माइकल ने बुधवार रात एक बयान में कहा कि वह मेडागास्कर के पुनर्निर्माण के लिए राष्ट्रपति पद की शपथ लेंगे। उच्च संवैधानिक कोर्ट इस समारोह का आयोजन करेगा। जबकि अफ्रीकी संघ ने यह घोषणा की है कि उसने सैन्य तख्तापलट होने के बाद मेडागास्कर की सदस्यता को तत्काल प्रभाव से निलंबित कर दिया है। साथ ही नागरिक नेतृत्व वाली शासन व्यवस्था की बहाली और चुनाव कराने की मांग की है। मेडागास्कर में गत 25 सितंबर को पानी और बिजली की समस्याओं के खिलाफ प्रदर्शन शुरू हुए थे, लेकिन बाद में ये भ्रष्टाचार, खराब शासन और बुनियादी सेवाओं के अभाव के खिलाफ व्यापक आक्रोश में बदल गए।

शनिवार को विरोध प्रदर्शन उस समय निर्णायक मोड़ पर पहुंच गया, जब सेना की कई यूनिटों ने भी राजोलीना के खिलाफ विद्रोह कर दिया। इसके चलते उन्हें भागने के लिए मजबूर होना पड़ा।

कोल्ड्रिफ सिरप मामला: श्रीसन फार्मा से प्रोपेलीन ग्लाइकाल खरीद का बिल गायब, केमिकल एनालिस्ट को रिमांड पर लिया

भोपाल। मध्य प्रदेश के तीन जिलों में 24 बच्चों की जान लेने वाले कोल्ड्रिफ कफ सीरप में उद्योगों में उपयोग होने वाला प्रोपेलीन ग्लाइकाल मिलाए जाने की जांच चल रही है। इस मामले में श्रीसन फार्मा कंपनी की केमिकल एनालिस्ट के. माहेश्वरी को तमिलनाडु से गिरफ्तार किया गया है। एसआईटी जांच में सामने आया है कि कफ सीरप बनाने में उपयोग होने वाले प्रोपेलीन ग्लाइकाल का बिल कंपनी से गायब है। जांच इसी पर निर्भर है कि इस केमिकल के आपूर्तिकर्ता को औषधीय उपयोग वाले प्रोपेलीन ग्लाइकाल का आर्डर दिया गया था या औद्योगिक उपयोग वाले का। एसआईटी के. माहेश्वरी को लेकर बुधवार को छिंदवाड़ा के परासिया पहुंची। यहां उसे न्यायालय में प्रस्तुत कर तीन दिनों के रिमांड पर लिया गया। पुलिस माहेश्वरी से यह जानने का प्रयास करेगी कि कंपनी में गुणवत्ता जांच में क्या लापरवाही हुई और असली जिम्मेदार कौन है। औषधि एवं प्रसाधन सामग्री अधिनियम 1940 के नियमों की कहां अनदेखी की गई है। सूत्रों के अनुसार, एसआईटी ने माहेश्वरी से कोल्ड्रिफ कफ सीरप की गुणवत्ता जांच रिपोर्ट मांगी थी, लेकिन वह नहीं दी गई।

चंबा में कैंपस साक्षात्कार में 24 युवाओं को मिली नौकरी इतने हजार वेतन देगी कंपनी, 90 पदों पर चयन अभी बाकी

चंबा 17 अक्टूबर। रोजगार उप कार्यालय तीसा में वीरवार को कैंपस साक्षात्कार का आयोजन किया। इसमें 30 युवाओं ने भाग लिया। कंपनी के प्रतिनिधियों ने 24 युवाओं का चयन किया है। चयनित युवाओं को एक माह के प्रशिक्षण के बाद नियुक्ति दी जाएगी। कंपनी की ओर से इन्हें 19,500 से 24 हजार रुपये तक वेतन और अन्य लाभ दिए जाएंगे।जिला रोजगार अधिकारी अरविंद सिंह चौहान ने बताया कि सिक्योरिटी और इंटेलिजेंस सर्विस इंडिया लिमिटेड हमीरपुर की ओर से सुरक्षाकर्मी के 90 पद भरने के लिए चंबा जिला में साक्षात्कार लिए जा रहे हैं। उन्होंने बताया कि 17 अक्टूबर को पंचायत घर भरमौर में कैंपस साक्षात्कार का आयोजन किया जाएगा। इसमें पुरुष अभ्यर्थी ही भाग ले सकते हैं।न्यूनतम शैक्षणिक योग्यता दसवीं निर्धारित की है। अभ्यर्थी की आयु 19 से 40 के बीच, ऊंचाई 165 सेंटीमीटर से अधिक और भार 55 से 95 किलो के बीच होना चाहिए। इच्छुक अभ्यर्थी शैक्षणिक मूल प्रमाणपत्र, पासपोर्ट साइज फोटो, रोजगार कार्यालय का प्रमाणपत्र, आधार कार्ड व बायोडाटा के साथ दिन में 11 बजे साक्षात्कार में भाग ले सकते हैं।

दुमका के मलूटी में काली पूजा की धूम 14 तरह की साग का लगता है भोग

दुमका, 17 अक्टूबर [एजेंसी]।

दुमका के ऐतिहासिक मंदिरों का गांव मलूटी में मंत्र ही नहीं तंत्र के साथ कालीपूजा की परंपरा अनूठी है। खास बात यह कि काली पूजा में यहां 14 अंक का खास महत्व है।यह भी कि तारापीठ की मां तारा की बड़ी बहन मौलीक्षा से आदेश लेने के बाद ही मलूटीवासी दीपावली के दिन काली पूजा का अनुष्ठान शुरु किया जाता है। मलूटी गांव के आठ मंडपों में काली की प्रतिमा पूरे विधि-विधान से स्थापित की जाती है। इसमें राजार बाड़ी में दो, मध्यम बाड़ी में एक, सिकीड़ बाडी में दो, छय तरफ में एक, चौठी बाड़ी में एक और श्मशान में एक काली की प्रतिमा स्थापित की जाती है। काली पूजा के दौरान तारापीठ समेत कई क्षेत्रों से तांत्रिक व साधक यहां साधना के लिए पहुंचते हैं। अधिकांश तांत्रिकों का जमावड़ा श्मशान काली मंदिर में ही होता है। परंपरा के मुताबिक काली पूजा के दिन व्रतधारी व मलूटी गांव के ग्रामीण ढोल-ढाक के साथ शाम होते ही मां मौलीक्षा की मंदिर में पहुंचकर एओजा पूजन अनुष्ठान करते हैं। इस अनुष्ठान के जरिए ग्रामीण मां मौलीक्षा से काली पूजन की अनुमति ली जाती है। इसके बाद मंदिर से सटे काली मंदिर के प्रांगण में जमकर आतिशबाजी की जाती है। आतिशबाजी को देखने के लिए बड़ी संख्या में श्रद्धालु व ग्रामीणों की भीड़ जुटती है।

गांव के सेवानिवृत्त शिक्षक कुमुदवरण राय बताते हैं कि इस वर्ष इस मौके पर तकरीबन डेढ़ लाख रुपये की लागत से आतिशबाजी करने की तैयारी है।इस अनुष्ठान के बाद सभी काली मंडपों में मां काली की प्रतिमा स्थापित की जाती है। इसके उपरांत महानिशा की बेला में काली की पूजा प्रारंभ की जाती है। पूजन के उपरांत बलि देने की परंपरा है। यहां छय तरफ काली मंडप पर भैंसा की बलि आज भी दी जाती है, जबकि शेष हिस्सों में पाठा की बलि पड़ती है।दीपावली के अगले सुबह छह बजे विधि-विधान से मां काली का सांकेतिक विसर्जन किया जाता है। इसी दिन शाम में सभी प्रतिमाओं को मां मौलीक्षा के मंदिर के समक्ष लाकर रखा जाता है और फिर श्रद्धा के साथ अपने-अपने तालाबों में इसका विसर्जन किया जाता है।मलूटी में काली पूजा में 14 अंक को शुभ माना गया है। यही कारण है कि काली पूजा के दिन मंडपों में 14 दीप जलाने की परंपरा है।

सोनीपत में पंचायती जमीन नहीं मिलने पर कब्रिस्तान में ही लगा दिया ओपन जिम, अब जमकर हो रहा विवाद

सोनीपत, 17 अक्टूबर [एजेंसी]।

गांवों में विकास कार्यों के नाम पर किस तरह से कमीशनखोरी का खेल खेला जाता है। अधिकारियों व ठेकेदरों से साठगांठ कर कमीशन की बंदरबांट का एक बड़ा उदाहरण सामने आया है। गांवों में युवाओं को सेहतमंद बनाने के लिए ओपन जिम लगाए जा रहे हैं, लेकिन ब्लाक समिति के कोटे से अधिकारियों ने गांव थरिया के कब्रिस्तान में दफनाए गए लोगों की कब्रों के ऊपर ही ओपन जिम की मशीनें लगवा दी। मशीनें मिट्टी में गाड़ दी गईं, लेकिन यहां कोई फर्श नहीं बनाया गया। गांव से एक किलोमीटर दूर होने के कारण यहां युवा व्यायाम करने नहीं आ रहे हैं। सबसे बड़ा सवाल यह उठ रहा है कि यह ओपन जिम किसके लिए लगवाया गया है। क्या कब्र में निकलकर मुर्दे कसरत करेंगे। मामला सामने आने पर अधिकारियों की जगहंसाई हो रही है। वहीं अधिकारी एक-दूसरे पर जिम्मेदारी डाल रहे हैं।सरकार की ओर से सभी गांवों में युवाओं को फिट रखने के लिए ओपन जिम लगवाए जा रहे हैं। सोनीपत खंड के गांव थरिया में भी ब्लाक समिति की ओर से ओपन जिम अलाट हुआ। करीब दो महीने पहले सरपंच फरमान से ओपन जिम लगवाने के लिए जगह की मांग की गई। इस पर सरपंच ने गांव में पंचायती जमीन न होने का हवाला दिया।अधिकारियों ने जिम कहीं भी लगवाने को कहा तो सरपंच ने गांव से एक किलोमीटर दूर कब्रिस्तान की चारदीवारी के अंदर जिम की मशीनें लगवाने को कह दिया। जिस जमीन पर जिम लगाया गया है, कई साल पहले इस जमीन पर जनाजे दफनाए जाते थे। अब यहां से थोड़ी दूर जनाजे दफनाए जाते हैं। ठेकेदार के कर्मचारियों ने मिट्टी में जिम की मशीनें गाड़कर इतिश्री कर ली, वहां पर फर्श तक नहीं बनाया गया। इसके बाद सरपंच फरमान से जिम लगाए जाने की रिसीविंग ले ली।कई बार फोन करने पर ब्लाक समिति के चेयरमैन नवीन ने कोई भी जानकारी देने से इनकार कर दिया। कब्रिस्तान में ओपन जिम लगाने के सवाल पर उन्होंने कहा कि मैं अभी गांव थरिया के सरपंच से पूछता हूं। वहीं सूत्रों ने बताया कि ओपन जिम लगाने में बड़े स्तर पर कमीशनखोरी हो रही है।इसमें कई स्तर पर कमीशन की बंदरबांट की जाती है। ठेकेदार समेत कई अधिकारियों की जेबें गर्म की जाती हैं।

इस कारण ही इन विकास कार्यों में बड़ी अनियमितताएं सामने आती हैं। वहीं जिम्मेदार अधिकारी मामला सामने आने पर अपनी जवाबदेही से बचते नजर आते हैं। यह मामला सामने आने पर अधिकारियों में दिनभर हड़कंप मचा रहा।ग्रामीण इरशाद ने बताया कि गांव में आठवीं तक का एक स्कूल है। गांव में तीन मस्जिद हैं। इसके अलावा कोई सुविधा नहीं है। गांव की आबादी करीब 2800 है और 1400 के करीब वोट हैं। गांव में 400 के करीब युवा ऐसे हैं जिन्हें जिम की जरूरत है।उन्होंने बताया कि मैंने गांव स्कूल में ओपन जिम लगवाने का सुझाव दिया था, लेकिन इसे गांव से एक किमी दूर कब्रिस्तान में लगा दिया गया। अब वहां कोई भी एक्सरसाइज करने नहीं जाता। वहीं गांव के सरपंच फरमान ने बताया कि पंचायत के पास कोई जमीन नहीं है, इसलिए ओपन जिम कब्रिस्तान में लगवाया गया था, लेकिन कब्र वहां दूर हैं। मामला मेरे संज्ञान में नहीं है। मैं पता करता हूं कि ओपन जिम कब्रिस्तान में क्यों लगाया गया। इसकी जांच की जाएगी। नोटिस भेजकर ठेकेदार से जवाब तलब किया जाएगा।

वनपाल ने जनकपुर कार्यालय परिसर में किया हंगामा

03 घंटे तक चला हाई बोल्टेज ड्रामा

जनकपुर। बुधवार को दोपहर एमसीबी जिला अंतर्गत विकासखंड मुख्यालय जनकपुर स्थित वन परिक्षेत्र कार्यालय में वनपाल के हाई वोल्टेज ड्रामा देखने को मिला, वनकर्मियों के लगातार समझाइस के बावजूद वनपाल का ड्रामा करीब 03 घंटे तक जारी रहा। मामला मनेन्द्रगढ़ वनमंडल के जनकपुर और कुंवारपुर परिक्षेत्र कार्यालय के सामने का है। प्राप्त जानकारी के अनुसार वन मण्डलाधिकारी मनेन्द्रगढ़ मनीष कश्यप के द्वारा वनपाल रामगोपाल सिंह का स्थानांतरण जनकपुर वन परिक्षेत्र से काष्ठागार जनकपुर में कर दिया गया। वन मण्डलाधिकारी के आदेश के पालनार्थ बुधवार को वन परिक्षेत्र कार्यालय जनकपुर से वनपाल रामगोपाल सिंह को रिलीप कर दिया गया, जिससे वनपाल बौखला गया और कार्यालय परिसर में ही हंगामा करना शुरू कर दिया। इस दौरान कुंवारपुर और जनकपुर परिक्षेत्र कार्यालय में मौजूद वनकर्मियों ने हंगामा कर रहा वनपाल को लगातार समझाइस देते रहे लेकिन उसका लगातार 03 घंटे तक हंगामा जारी रखा हुआ था।

जिले में दलहन-तिलहन के क्षेत्र में उछाल, धान के रकबे में कमी

कोरिया । छत्तीसगढ़ में विगत वर्ष धान की बंपर पैदावार के बावजूद अब किसानों में पारंपरिक फसलों के साथ अन्य फसलों की ओर रुझान बढ़ने लगा है। कोरिया जिले के किसान अब धान के अलावा दलहन, तिलहन की खेती में भी रुचि ले रहे हैं, जिससे फसल विविधीकरण की दिशा में एक सकारात्मक परिवर्तन देखा जा रहा है।

धान के रकबे में कमी

कृषि विभाग से मिली जानकारी के अनुसार, खरीफ वर्ष 2024-25 में जिले में 33,842 हेक्टेयर में धान की बुवाई की गई थी, जबकि वर्तमान खरीफ वर्ष 2025-26 में 32,920 हेक्टेयर में धान बोए गए हैं। इस प्रकार 922 हेक्टेयर क्षेत्रफल में (2.75 प्रतिशत) कमी दर्ज की गई है।

दलहन-तिलहन के रकबे में वृद्धि

जिले में दलहन और तिलहन फसलों के रकबे में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। विगत वर्ष 9,194 हेक्टेयर में दलहन की खेती की गई थी, जबकि इस वर्ष यह बढ़कर 9,730 हेक्टेयर हो गई है यानि 536 हेक्टेयर (5.82 प्रतिशत) की वृद्धि की गई है। वर्ष 2024 में 1,874 हेक्टेयर क्षेत्र में तिलहन की बुवाई हुई थी, जबकि वर्तमान वर्ष में यह बढ़कर 2,272 हेक्टेयर तक पहुँच गई है यानी 398 हेक्टेयर (21.23 प्रतिशत) की बढ़ोतरी हुई है।

मूंगफली फसलों के रकबे में उछाल

मूंगफली फसल की बात करें तो इसमें भी उल्लेखनीय बढ़ोतरी हुई है। पिछले वर्ष 933 हेक्टेयर में बुवाई की गई थी, जबकि इस वर्ष यह बढ़कर 1,520 हेक्टेयर हो गई है यानि 587 हेक्टेयर (38.61 प्रतिशत) की वृद्धि हुई है।

जिले के किसान फसल विविधीकरण की ओर अग्रसर

मुख्यमंत्री श्री विष्णुदेव साय द्वारा प्रदेश के किसानों और ग्रामीणों को आर्थिक रूप से सशक्त बनाने के लिए उठाए गए ठोस कदमों का ही यह परिणाम है कि अब जिले के किसान फसल विविधीकरण की ओर अग्रसर हो रहे हैं। जिले के किसान धान के अलावा दलहन, तिलहन फसलों के माध्यम से अपनी आमदनी बढ़ाने में रूचि ले रहे हैं। आने वाले समय में कोरिया जिला दलहन-तिलहन उत्पादन के क्षेत्र में अग्रणी जिलों में शामिल होगा।

कृषि विभाग द्वारा किसानों को उन्नत बीज, तकनीकी मार्गदर्शन और विपणन सुविधाएं उपलब्ध कराई जा रही हैं। विभागीय अधिकारियों के अनुसार, जलवायु और मिट्टी की उपयुक्तता के चलते जिले में तिलहन और दलहन दोनों की पैदावार में और वृद्धि की संभावना है।

घर के बाहर खड़ी ई-रिक्शा पार

रायपुर। सेक्टर 3 शिवानंद नगर के पास घर के बाहर खड़ी ई-रिक्शा को अज्ञात चोर ने पार कर दी। प्रार्थी की शिकायत पर खमतराई पुलिस ने अज्ञात चोर के खिलाफ अपराध दर्ज किया है।मिली जानकारी के अनुसार प्रार्थी राकेश ग्रहकार 31 वर्ष सेक्टर 3 शिवानंद नगर का रहने वाला है। प्रार्थी पेशे से ई-रिक्शा चालक है। बताया जाता है कि वह अपनी ई-रिक्शा को अपने घर के बाहर खड़ी किया था, तभी अज्ञात चोर ने पार कर दिया। चोरी गए ई-रिक्शा की कीमत करीब डेढ़ लाख रुपए के आसपास बताई जा रही है। प्रार्थी की शिकायत पर खमतराई पुलिस ने अज्ञात चोर के खिलाफ अपराध दर्ज कर जांच में लिया है।

बिहार विधानसभा चुनाव प्रचार के लिए मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय रवाना, कई जनसभाओं को करेंगे संबोधित

रायपुर। छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय बिहार विधानसभा चुनाव के प्रथम चरण के प्रचार अभियान में हिस्सा लेने के लिए सोमवार को रवाना हो गए। रवाना होने से पहले रायपुर एयरपोर्ट पर मीडिया से चर्चा करते हुए उन्होंने कहा कि वे बिहार प्रवास पर जा रहे हैं, जहां दो चरणों में विधानसभा चुनाव होने हैं।

मुख्यमंत्री ने बताया कि वे पहले चरण के नामांकन प्रक्रिया के तहत तीन भाजपा प्रत्याशियों की नामांकन रैलियों में शामिल होकर जनता से समर्थन की अपील करेंगे। इस दौरान उन्होंने कांग्रेस और पूर्व मुख्यमंत्री भूपेश बघेल पर भी निशाना साधा। मुख्यमंत्री साय ने कहा, भूपेश बघेल पहले भी कई राज्यों के चुनावों में प्रभारी रह चुके हैं, लेकिन उनके नेतृत्व में क्या नतीजे आए हैं, यह सभी ने देखा है।

मुख्यमंत्री साय के साथ वित्त मंत्री ओपी चौधरी, स्कूल शिक्षा मंत्री गजेंद्र यादव और नागरिक आपूर्ति निगम के अध्यक्ष संजय श्रीवास्तव भी बिहार दौरे पर गए हैं। बिहार दौरे के कार्यक्रम के अनुसार, सीएम साय सुबह 11:35 बजे पटना के स्काउट एंड गाइड मैदान में एक बड़ी जनसभा को संबोधित करेंगे। इसके बाद दोपहर 1 बजे वे तारापुर विधानसभा से भाजपा प्रत्याशी सम्राट चौधरी की नामांकन रैली में शिरकत करेंगे। दोपहर 2:15 बजे वे मुंगेर विधानसभा सीट से भाजपा उम्मीदवार कुमार प्रणय की नामांकन रैली में शामिल होंगे।

शाम करीब 6:30 बजे मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय विशेष विमान से रायपुर लौट आएंगे। यह दौरा भाजपा के लिए चुनावी माहौल बनाने और पार्टी प्रत्याशियों को मजबूत समर्थन दिलाने की दिशा में अहम माना जा रहा है।

नशे में धुत शिक्षक का वीडियो वायरल, बच्चों और महिला शिक्षिकाओं के सामने की अभद्रता

बिलासपुर। मस्तूरी विकासखंड के ग्राम सोन स्थित एक प्राइमरी स्कूल से एक बेहद शर्मनाक मामला सामने आया है। यहां पदस्थ शिक्षक विश्वकर्मा प्रसाद कश्यप का एक वीडियो सोशल मीडिया पर तेजी से वायरल हो रहा है, जिसमें वह कक्षा के अंदर नशे की हालत में अपनी शर्ट उतारकर कुर्सी पर बैठा नजर आ रहा है।

15 नवम्बर से होंगी समर्थन मूल्य पर धान खरीदी

9 नवम्बर से पंजीकृत किसानों को जारी होंगे टोकन

कोरिया बैकुंठपुर । राज्य शासन द्वारा खरीफ विपणन वर्ष 2025-26 के अंतर्गत किसानों से समर्थन मूल्य पर धान उपार्जन 15 नवम्बर 2025 से प्रारंभ करने का निर्णय लिया गया है। इस संबंध में आज कलेक्टर श्रीमती चन्दन त्रिपाठी की अध्यक्षता में समय-सीमा की बैठक आयोजित की गई। बैठक में कलेक्टर ने कृषि, सहकारिता, खाद्य, मार्कफेड तथा नोडल अधिकारियों को विशेष निर्देश देते हुए कहा कि यह राज्य सरकार का अत्यंत महत्वपूर्ण अभियान है। इसमें किसी भी प्रकार की लापरवाही या कोताही बर्दाश्त नहीं की जाएगी। उन्होंने कहा कि धान उपार्जन की प्रक्रिया को अधिक कृषक उन्मुख, दक्ष और पारदर्शी बनाने के उद्देश्य से विभागों के बीच समन्वय और प्रशिक्षण आवश्यक है।

इंटीग्रेटेड कंट्रोल एंड कमांड सेंटर' की स्थापना,

धान उपार्जन एवं निराकरण प्रक्रिया में संभावित अनियमितताओं को नियंत्रित करने हेतु शासन द्वारा विपणन संघ मुख्यालय स्तर पर 'इंटीग्रेटेड कंट्रोल एंड कमांड सेंटर' की स्थापना की जा रही है। इसके क्रियान्वयन के लिए जिला स्तर पर भी कंट्रोल एंड कमांड सेंटर स्थापित किए जाएंगे।

कलेक्टर ने उपार्जन केंद्र प्रभारियों और सहकारिता विभाग के अधिकारियों को निर्देश दिए कि धान के उचित रखरखाव, किसानों की सुविधाओं और पारदर्शिता के लिए सभी आवश्यक व्यवस्थाएं समयपूर्व सुनिश्चित की जाएं। उन्होंने कहा कि सरकार की %किसानों से एक-एक दाना धान खरीदने की प्रतिबद्धता% को पूर्ण करने के लिए सभी स्तरों पर संवेदनशीलता और तत्परता अपेक्षित है।

संवेदनशील केंद्रों पर विशेष निगरानी व उड़नदस्ता दल तैनात,जिले के उपार्जन केंद्रों को पूर्व वर्षों के अनुभवों के आधार पर अतिसंवेदनशील, संवेदनशील एवं सामान्य श्रेणियों में वर्गीकृत किया गया है। संवेदनशील केंद्रों पर पृथक नोडल अधिकारी नियुक्त किए जाएंगे, जो नियमित निरीक्षण कर रिपोर्ट देंगे।इंटीग्रेटेड कंट्रोल एंड कमांड सेंटर से प्राप्त अलर्ट के आधार पर उड़नदस्ता दल तत्काल कार्रवाई करेंगे। सीमावर्ती उपार्जन केंद्रों पर पर्याप्त चेक पोस्ट की स्थापना भी की जा रही है ताकि अवैध धान की आवक को रोका जा सके। सभी अधिकारियों और कर्मचारियों की ड्यूटी सुनिश्चित करने के निर्देश दिए गए हैं।अब-तक 50 करोड़ रुपए का कृषि ऋण वितरण,जिले में 65 करोड़ रुपए कृषि ऋण के विरुद्ध अब-तक 15 हजार 679 किसानों को 50 करोड़ रुपए का कृषि ऋण वितरण किया जा चुका। 21 उपार्जन केंद्रों से 1.37 लाख मीट्रिक टन धान खरीदी का लक्ष्य,खरीफ वर्ष 2025-26 में 1 लाख 37 हजार 468 मीट्रिक टन धान खरीदी का लक्ष्य है। विगत खरीफ वर्ष 2024-25 में पंजीकृत किसानों की संख्या 20 हजार 117 थीं, जिसमे से 19 हजार 606 किसानों ने उपार्जन केंद्रों में धान विक्रय किए थे। मिली जानकारी के मुताबिक 18 हजार 494 किसानों का कैरी फारवर्ड किया गया है। इस वर्ष साख सहकारी समिति सहित 21 उपार्जन केंद्रों में धान खरीदी की जाएगी।टोकन वितरण की प्रक्रिया,धान खरीदी के लिए टोकन आवेदन प्रक्रिया 9 नवम्बर 2025 से प्रारंभ होगी।

एग्रीस्टेक पोर्टल में 30 अक्टूबर तक किसानों को कराना होगा पंजीयन,कलेक्टर ने सभी अधिकारियों को निर्देश दिए कि 30 अक्टूबर 2025 तक धान उपार्जन से संबंधित सभी तैयारियां पूर्ण कर ली जाएं साथ ही एग्रीस्टेक पोर्टल में जिन किसानों का पंजीयन अब तक नहीं हुआ है, ऐसे किसानों का पंजीयन कराने में त्वरित कार्यवाही करने के निर्देश दिए हैं ताकि किसानों को उपज का सही दाम मिल सके।

मुख्यमंत्री के निर्देश पर मुसाफिर पंजी में दर्ज होने लगा रिकॉर्ड

कोरिया बैकुंठपुर मुख्यमंत्री द्वारा हाल ही में आयोजित कलेक्टर कॉन्फ्रेंस में राज्य एवं केंद्र सरकार की विभिन्न योजनाओं की समीक्षा के साथ ही मुसाफिर पंजी के प्रभावी संचालन के निर्देश दिए गए थे। मुख्यमंत्री ने सभी जिलों के कलेक्टरों को निर्देशित किया था कि गांवों में बाहरी राज्यों एवं शहरों से आने वाले व्यक्तियों का पूरा ब्यौरा संधारित किया जाए वे किस उद्देश्य से आए हैं, कहां से आए हैं, कितने समय के लिए रुके हैं, तथा उनका नाम, पता, आधार और मोबाइल नंबर इत्यादि जानकारी कोटवार के पंजी में दर्ज की जाए।

मुख्यमंत्री के निर्देशों के त्वरित अनुपालन में तहसील सोनहत में सभी 79 कोटवारों द्वारा मुसाफिर पंजी संधारित किया गया है। पंजी का निरीक्षण संबंधित पटवारी एवं कानूनगो द्वारा किया गया है, जिससे दर्ज जानकारी का सत्यापन सुनिश्चित हुआ है। इन पंजियों में बाहरी शहरों एवं राज्यों से आने वाले फेरीवाले, बर्तन बेचने वाले, श्रृंगार सामग्री विक्रेता सहित अन्य मुसाफिरों का विवरण नियमित रूप से दर्ज किया जा रहा है। इस पहल से ग्राम स्तर पर आने-जाने वालों की निगरानी और सुरक्षा व्यवस्था को सुदृढ़ बनाने में मदद मिलेगी।

स्वास्थ्य मंत्री श्याम बिहारी जायसवाल ने पूर्व विधानसभा उपाध्यक्ष बनवारी लाल अग्रवाल को दी श्रद्धांजलि

कोरबा कोरिया। छत्तीसगढ़ शासन के लोक स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्री श्याम बिहारी जायसवाल ने पूर्व विधानसभा उपाध्यक्ष एवं वरिष्ठ जनप्रतिनिधि स्वर्गीय बनवारी लाल अग्रवाल के निधन पर गहरा शोक व्यक्त किया। उन्होंने गुरुवार को श्री अग्रवाल के निवास स्थान जाकर उन्हें विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित की और शोकाकुल परिजनों से मुलाकात कर संवेदना व्यक्त की।

स्वास्थ्य मंत्री श्री जायसवाल स्वर्गीय अग्रवाल की अंतिम यात्रा में भी सम्मिलित हुए और मोतीसागर पारा स्थित मुक्तिधाम में पुष्पांजलि अर्पित कर उन्हें अंतिम विदाई दी। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि स्वर्गीय बनवारी लाल अग्रवाल जी ने कोरबा जिले के गरीबों और आम जनता की आवाज को सदैव बुलंद किया। उन्होंने जिले के सर्वांगीण विकास में उल्लेखनीय योगदान दिया। साडा (विशेष क्षेत्र विकास प्राधिकरण) कोरबा के अध्यक्ष के रूप में उन्होंने शहर के विकास के लिए अनेक महत्वपूर्ण कार्य किए। इस अवसर पर कटघोरा विधायक प्रेमचंद पटेल, कोरबा एसडीएम सरोज महिलांगे, अन्य जनप्रतिनिधि, गणमान्य नागरिक एवं बड़ी संख्या में ष्नगरवासी एवं उनके शुभचिंतक उपस्थित रहे। सभी ने स्वर्गीय श्री अग्रवाल को पुष्प अर्पित कर उन्हें श्रद्धांजलि दी।

अंशिका कश्यप विज्ञान प्रतियोगिता में करेंगी राष्ट्रीय मंच पर प्रतिनिधित्व,मॉडल को मिली सराहना

कोरिया जिला फिर हुआ गौरवान्वित

कोरिया । रजत जयंती महोत्सव 2025 के अंतर्गत राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, रायपुर एवं छत्तीसगढ़ विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित राष्ट्रीय विज्ञान संगोष्ठी 2025 का राज्य स्तरीय प्रतियोगिता विगत दिनों शासकीय शिक्षक शिक्षा महाविद्यालय, रायपुर में संपन्न हुआ।

संगोष्ठी का विषय था क्वांटम युग का आगाज-संभावनाएं एवं चुनौतियाँश। इस प्रतियोगिता में सेजेस महलपारा, बैकुंठपुर (जिला कोरिया) की प्रतिभाशाली छात्रा कु. अंशिका कश्यप ने अपने उत्कृष्ट प्रस्तुतीकरण और वैज्ञानिक दृष्टिकोण से राज्य में प्रथम स्थान प्राप्त किया।क्या है क्वांटम युग इसे श्नई वैज्ञानिक-तकनीकी क्रांतिश् कहा जाता है, क्योंकि इसमें कंप्यूटिंग, संचार व सेंसरिंग जैसी प्रणालियाँ क्वांटम कणों के असामान्य व्यवहार का लाभ उठाकर काम करती हैं। इसे इस तरह से समझ जा सकता है, सिक्के को उछालने पर गिरते ही वह या तो हेड होगा या टेल, लेकिन हवा में घूमते समय वह दोनों स्थितियों में 'एक साथ' रहता है, इसी तरह क्वांटम कण भी एक ही समय में बहुत-सी अवस्थाओं में हो सकते हैं, जिसे सुपरपोज़िशन कहते हैं।अंशिका ने यह उपलब्धि भौतिकी विषय की व्याख्याता श्रीमती शिल्पी सिंह के कुशल मार्गदर्शन में हासिल की है। राज्य स्तर पर शीर्ष स्थान प्राप्त करने के साथ ही कु. अंशिका कश्यप को अब राष्ट्रीय स्तर पर छत्तीसगढ़ राज्य का प्रतिनिधित्व करने का गौरव प्राप्त होगा। यह उपलब्धि न केवल उनके विद्यालय, बल्कि पूरे कोरिया जिले के लिए गर्व का विषय है। शिक्षाविदों और विज्ञान प्रेमियों ने अंशिका को इस शानदार सफलता के लिए बधाई देते हुए कहा कि यह उपलब्धि कोरिया की प्रतिभाओं की क्षमता और परिश्रम का प्रमाण है।

अंतर्राष्ट्रीय बालिका दिवस एवं राष्ट्रीय पोषण माह के अवसर पर जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन

कोरिया। महिला एवं बाल विकास विभाग कोरिया छ0ग0 के द्वारा भारत सरकार की कार्ययोजना अनुसार 'बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ' योजना अतंर्गत महिला सशक्तिकरण और बलिकाओं के उज्जवल भविष्य को समर्पित अंतराष्ट्रीय बालिका दिवस एवं राष्ट्रीय पोषण माह के अवसर पर कलेक्टर श्रीमती चन्दन त्रिपाठी के निर्देशन एवं जिला कार्यक्रम अधिकारी श्री एन0एस0 रावटे के मार्गदर्शन में शासकीय कन्या महाविद्यालय बैकुण्ठपुर में बालिकाओं का जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया, ताकि बालिकाएं अपने साथ होने वाली किसी भी प्रकार की हिंसात्मक घटनाओं से बचा सकें एवं पोषण माह अंतर्गत बालिकाओं को पोषण संबंधित जानकारी दिया गया। कार्यक्रम में जिला मिशन समन्वयक, श्रीमति दीपिका पटेल, जेन्डर विशेषज्ञ श्रीमति अनुराधा तिवारी उपस्थित रहीं।

स्टेनोग्राफर एवं टाईपिंग परीक्षा के लिए 30 अक्टूबर तक लिए जायेंगे आवेदन

कोरिया । छत्तीसगढ़ में शीघ्रलेखन (स्टेनोग्राफर) एवं मुद्रलेखन (टाईपिंग) कम्प्यूटर कौशल परीक्षा के लिए 30 अक्टूबर तक ऑनलाईन आवेदन किए जा सकते हैं। हिन्दी एवं अंग्रेजी स्टेनोग्राफी में 100 शब्द प्रति मिनट की गति एवं हिन्दी तथा अंग्रेजी कम्प्यूटर मुद्रलेखन में 5 हजार, 8 हजार, 10 हजार की-डिप्रेशन प्रति घंटा की गति के लिए यह परीक्षाएँ आयोजित की जा रही हैं। इस संबंध में जरूरी जानकारी और आवेदन शीघ्रलेखन एवं मुद्रलेखन कौशल परीक्षा परिषद् की वेबसाईटपर उपलब्ध हैं। इस परीक्षा में 10वीं कक्षा पास और 16 वर्ष की आयु पूरी कर चुके अभ्यर्थी आवेदन कर सकते हैं। आवेदन की अंतिम तिथि 30 अक्टूबर 2025 निर्धारित की गई है।कौशल परीक्षा परिषद् से प्राप्त जानकारी के अनुसार ऑनलाईन आवेदन भरते समय अभ्यर्थियों को अपनी सभी प्रविष्टियां भली भांति जांच समझकर एवं स्वयं संतुष्ट होने के बाद ही सम्मिट करना चाहिए। एक बार आवेदन सबमिट कर देने के पश्चात् संशोधन इत्यादि के लिए पृथक से कोई समय नहीं दिया जायेगा। परिषद द्वारा यथा संभव परीक्षा केन्द्रों में उपलब्ध कम्प्यूटर सिस्टम के अनुपात में निकटतम परीक्षा केन्द्र आवंटित करने का प्रयास किया जाएगा। परीक्षार्थी को उसी आवंटित परीक्षा केन्द्र पर परीक्षा देनी होगी। आवेदन पत्र भरते समय अभ्यर्थी को अपना नवीनतम रंगीन पासपोर्ट आकार, स्पष्ट फोटो का प्रयोग करना होगा। साईड पोज फोटो मान्य नहीं होगा। अभ्यर्थी को नमूना हस्ताक्षर के लिए काली स्याही का ही प्रयोग करना होगा। इसके बाद दोनों स्कैन कर आवेदन पत्र में निर्धारित स्थान पर अपलोड करना होगा।हिन्दी अंग्रजी शीघ्रलेखन परीक्षा के लिए अनारक्षित एवं अन्य पिछड़ा वर्ग के अभ्यर्थियों को चार सौ रूपए एवं अनुसूचित जाति-जनजाति वर्ग के अभ्यर्थियों को दो सौ रूपए परीक्षा शुल्क जमा करना होगा। इसी तरह सभी हिन्दी एवं अंग्रेजी कम्प्यूटर टाईपिंग परीक्षाओं के लिए अनारक्षित एवं अन्य पिछड़ा वर्ग के अभ्यर्थियों को तीन सौ रूपए एवं अनुसूचित जाति-जनजाति वर्ग के अभ्यर्थियों को एक सौ पचास रूपए परीक्षा शुल्क जमा करना होगा।

परिषद द्वारा परीक्षण के बाद आवेदन पत्र अपूर्ण, त्रुटिपूर्ण या भ्रामक जानकारी युक्त पाये जाने पर बिना किसी पूर्व सूचना के आवेदन निरस्त किया जा सकता है साथ ही परीक्षा शुल्क वापसी योग्य नहीं होगा। इसका सम्पूर्ण उत्तरदायित्व परीक्षार्थी का होगा। आवेदक किसी एक विषय हिन्दी, अंग्रेजी (गति 5000, 8000 एवं 10000 की डिप्रेशन प्रतिघंटा के मान से) की परीक्षा हेतु पृथक-पृथक गति के लिए आवेदन तो कर सकते हैं किन्तु एक ही गति की परीक्षा के लिए अलग-अलग परीक्षा केन्द्रों के लिए आवेदन नहीं कर सकते। इस प्रकार के आवेदन करने पर आवेदन निरस्त कर दिया जायेगा। आवेदक को ऑनलाईन आवेदन पत्र, व परीक्षा शुल्क की सम्पूर्ण प्रक्रिया उपरान्त लिये गये प्रिंट की एक प्रति अपने पास सुरक्षित रखने की सलाह दी जाती है। आवश्यकता पड़ने पर परिषद द्वारा मांगे जाने पर ऑनलाईन आवेदन पत्र इत्यादि अनिवार्यत: दिखाया जाना होगा। परिषद द्वारा आवेदनों के परीक्षण उपरान्त प्रवेश पत्र जारी किये जाएंगे जिसे ऑनलाईन ही डाऊनलोड किये जा सकेंगें। प्रवेश पत्र में अंकित परीक्षा केन्द्र पर ही अभ्यर्थी को परीक्षा दी जानी होगी। परीक्षा केन्द्र में परिवर्तन नहीं किया जावेगा। परीक्षार्थियों को परीक्षा हॉल में प्रवेश करने के लिए अपना प्रवेश पत्र एवं शासन द्वारा जारी पहचान पत्र जैसे आधार कार्ड,पैन कार्ड, ड्राइविंग लाइसेंस, मतदाता परिचय पत्र आदि में से एक मूल दस्तावेज साथ लाना अनिवार्य होगा अन्यथा प्रवेश नहीं दिया

फर्जी दस्तावेज के आधार ट्रेलर वाहन में तय सीमा से अधिक माल परिवहन करने के मामले में वाहन स्वामी एवं चालक को थाना चंदौरा पुलिस ने किया गिरफ्तार

सूरजपुर। दिनांक 24.09.2025 को विश्रामपुर निवासी वरिन्दर सिंह ने थाना चंदौरा पुलिस को सूचना दिया कि ट्रेलर क्रमांक सीजी 10 एएक्स 1700 का चालक एवं वाहन स्वामी ट्रेलर में फर्जी रूप से पिट पास एवं रजिस्ट्रेशन फोटो कापी में बदलाव कर धोखाधड़ी करते हुए वाहन में कोयला लोड़ कर चंदौरा मार्ग से परिवहन कर रहे है। सूचना पर थाना चंदौरा पुलिस ने चंदौरा चौक में नाकाबंदी कर ट्रक को रोका। ट्रेलर में लोड कोयला एवं वाहन के दस्तावेज की छायाप्रति व मूल बिल्टी सहित जप्त कर प्रार्थी वरिन्दर सिंह की रिपोर्ट अपराध क्रमांक 03/25 धारा 318(4) बीएनएस के तहत मामला पंजीबद्ध किया गया।

डीआईजी व एसएसपी सूरजपुर श्री प्रशांत कुमार ठाकुर ने फर्जी दस्तावेज के आधार पर धोखाधड़ी करने वाले आरोपियों की पतासाजी कर जल्द पकड़ने के निर्देश दिए। मामले की विवेचना के दौरान पतासाजी कर वाहन स्वामी देवानंद गुप्ता उर्फ डी.एन. को पकड़ा गया। पूछताछ पर उसने बताया कि अपने ट्रेलर वाहन का लोड क्षमता बढ़वाकर अधिक भाड़ा लेने के लिए रजिस्ट्रेशन एवं परमिट कागजात का फोटो कापी कराकर उसमें लिखे वजन क्षमता 55 हजार किलोग्राम को हटाकर उसके स्थान पर 57 हजार 5 सौ कर लिया और उसी फोटो कापी कागजात के आधार पर अम्बिकापुर से आईडी पासवर्ड के माध्यम से खनिज पत्रक में भार क्षमता को बढ़वाकर तैयार करा लिया और उस वजन क्षमता बढ़े खनिज कागजात को अपने ड्राईवर जनकलाल को देकर जगन्नाथपुर कोयला खदान से निर्धारित क्षमता से अधिक कोयला ट्रांसपोर्टिंग कराने लगा। दिनांक 24.09.2025 को भी अपने ट्रेलर वाहन में फर्जी कागजात के आधार पर वाहन चालक जनकलाल के माध्यम से कोयला लोड कराया और उसके बाद

जनकलाल अपने हेल्फर चालक को गाड़ी देकर कोयला खाली कराने हेतु चंदौसी उत्तरप्रदेश भेजना बताया। वाहन के दस्तावेज एवं अन्य कागजात जप्त कर आरोपियों के द्वारा कूटरचित दस्तावेज तैयार कर धोखाधड़ी करना एवं एक से अधिक आरोपी घटना में शामिल होने पर धारा 336(3), 338, 3(5) बीएनएस जोड़ी गई एवं आरोपी 1. देवानंद गुप्ता उर्फ डीएन पिता परमेश्वर गुप्ता उम्र 30 वर्ष निवासी ग्राम परसवार कलॉं, थाना राजपुर, जिला बलरामपुर 2. जनकलाल पिता श्री नाथ उम्र 40 वर्ष ग्राम बोझा चौकी खड़गवां को गिरफ्तार किया गया तथा अन्य आरोपी की भी पतासाजी की जा रही है। कार्यवाही अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक संतोष महतो व डीएसपी अनूप एक्का के मार्गदर्शन में थाना प्रभारी चंदौरा मनोज सिंह, चौकी प्रभारी खड़गवां रघुवंश सिंह व उनकी टीम सक्रिय रही।

ओबीसी वर्ग की प्रगति के लिए एकजुट होकर करें कार्य- आर.एस. विश्वकर्मा

कोरिया । छत्तीसगढ़ पिछड़ा वर्ग कल्याण आयोग के अध्यक्ष श्री आर.एस. विश्वकर्मा ने कहा कि पिछड़ा वर्ग के सामाजिक, आर्थिक और शैक्षणिक उत्थान के लिए सभी विभागों को मिलकर काम करना होगा। उन्होंने कहा कि समाज की सशक्तता तभी संभव है जब योजनाओं का लाभ अंतिम व्यक्ति तक पहुंचे।उन्होंने आज कलेक्ट्रेट सभाकक्ष में आयोजित विभागीय समीक्षा बैठक में विभिन्न योजनाओं की प्रगति की जानकारी ली और अधिकारियों को निर्देशित किया कि पिछड़ा वर्ग के अधिक से अधिक हितग्राही शासकीय योजनाओं से लाभान्वित हों।बैठक में आयोग के सदस्य श्री यशवंत सिंह वर्मा, बलदाऊ राम साहू, हरिशंकर यादव और कृष्णा गुप्ता, कलेक्टर श्रीमती चन्दन त्रिपाठी, जिला पंचायत के मुख्य कार्यपालन अधिकारी डॉ. आशुतोष चतुर्वेदी तथा अन्य अधिकारी उपस्थित थे।

बैठक में ग्रामीण एवं अन्य पिछड़ावर्ग क्षेत्र विकास प्राधिकरण, मनरेगा, पशु चिकित्सा, उद्यानिकी, मत्स्य, खाद्य, पंचायत एवं ग्रामीण विकास, उद्योग व्यापार केंद्र, कौशल विकास, महिला एवं बाल विकास सहित विभिन्न विभागों की योजनाओं की समीक्षा की गई।अध्यक्ष श्री विश्वकर्मा ने ओबीसी छात्रावास निर्माण के प्रस्ताव शीघ्र भेजने, स्कॉलरशिप योजना का लाभ सभी पात्र विद्यार्थियों को दिलाने, तथा पीएम विश्वकर्मा योजना के माध्यम से अधिक से अधिक लोगों को जोड़ने के निर्देश दिए।उन्होंने कहा कि जाति प्रमाणपत्र बनाते समय क्रीमी एवं नॉन क्रीमी लेयर के प्रावधानों का पालन किया जाए। साथ ही पिछड़ा वर्ग के लोगों को चिन्हित व्यवसायों में सहकारी समितियां बनाकर सामूहिक रूप से कार्य करने की अपील की, जिससे समाज की आर्थिक सशक्तता को बल मिलेगा।

अध्यक्ष ने युवाओं से कहा कि वे तकनीकी शिक्षा अपनाएं, सरकारी योजनाओं का लाभ लेकर आत्मनिर्भर बनें। उन्होंने अधिकारियों से कहा कि वे संवेदनशीलता के साथ कार्य करें,

कांग्रेसी चला रहे हस्ताक्षर अभियान

कोरबा। वोटर अधिकार को लेकर कांग्रेसी सभी ब्लॉकों में हस्ताक्षर अभियान चला रहे हैं। कांग्रेस के राष्ट्रीय नेता राहुल गांधी के द्वारा वोटर अधिकार को लेकर बिहार में रैली निकाली गई थी। इसके बाद पूरे देश भर में वोटर अधिकार को लेकर हस्ताक्षर अभियान चलाए जा रहे हैं ताकि किसी भी व्यक्ति का वोट कट न सके। जिला कांग्रेस कमेटी ग्रामीण के अध्यक्ष मनोज चौहान ने बताया कि ब्लॉकों में कार्यकर्ताओं के द्वारा हस्ताक्षर अभियान शुरू कर दिया गया है। बांकी ब्लॉक में टिकाराम मनहर, संतोषी चौहान, फिरोज अनंत, कृष्णा दास, धनंजय दीवान, कुणाल आजाद सहित कई कार्यकर्ता सक्रिय हैं। दीपका ब्लॉक में अध्यक्ष दिलीप सिंह, विशाल शुक्ला, सद्दाम सहित सभी कार्यकर्ता हस्ताक्षर अभियान चला रहे हैं। जबकि कटघोरा ब्लॉक में ग्रामीण अध्यक्ष गोरेलाल यादव सक्रिय हैं। बांकीमोंगरा के ब्लॉक अध्यक्ष टिकाराम मनहर ने बताया कि उनके द्वारा 300 लोगों से हस्ताक्षर कराए गए हैं। हस्ताक्षर अभियान के बाद कागज को जिला कांग्रेस कमेटी को सौंप दिया जाएगा।

प्रदेश प्रभारी रत्नाकर लेंगे बैठक

कोरबा। बसपा के प्रदेश प्रभारी दाऊराम रत्नाकर का आज कोरबा आगमन हो रहा है। वे कटघोरा विधानसभा क्षेत्र के ग्राम जवाली में पांच सेक्टरों की बैठक लेंगे। उनके साथ प्रदेश अध्यक्ष श्याम टंडन व महामंत्री राधेश्याम सूर्यवंशी भी रहेंगे। इस आशय की जानकारी देते हुए बाबूलाल टंडन ने बताया कि बसपा के द्वारा सभी विधानसभा क्षेत्रों को मजबूत करने के लिए अलग-अलग बैठक ली जा रही है। आज जवाली में होने वाले बैठक को सफल बनाने के लिए जिलाध्यक्ष फूलचंद सोनवानी, विधानसभा अध्यक्ष राघवेंद्र मनहर, महासचिव विवेक महंत रैली कर रहे हैं। कोरबा विधानसभा क्षेत्र में 24 सेक्टर बनाए गए हैं। इन सभी सेक्टरों में विधानसभा अध्यक्ष गजू चौहान, अजय निराला, छोटेलाल निराला, भगवती केमेंडीज, निलेश सोनवानी सहित अन्य कार्यकर्ता जा रहे हैं।

श्रमिक संगठनों ने बनाई रणनीति

कोरबा। एसईसीएल दीपका क्षेत्र में बीकेकेएमएस के आने के बाद अन्य संगठन रणनीति बनाने में जुट गए हैं। सदस्यता अभियान में बीकेकेएमएस सबसे आगे रहा। इसके बाद से अन्य संगठनों में फेरबदल किए जा रहे हैं। नई कार्यकारिणी बनाकर जवाबदारी दी जा रही है। बीकेकेएमएस के रमेश गुरुद्वान ने अपनी टीम के साथ संगठन को मजबूत किया है। इसके बाद से यहां पर एचएमएस भी सक्रिय हो गया है। अमृतलाल चंद्रा को एरिया जेसीसी बनाया गया है। इनके साथ तरूण राहा व उदयन भी क्षेत्र में सक्रिय हो गए हैं। पिछले दिनों एसकेएमएस में जीत सिंह को अध्यक्ष, विनोद यादव को एरिया सचिव बनाया गया। इस टीम के द्वारा भी आगे बढ़ने के लिए रणनीति तैयार की जा रही है। एसईकेएमसी के सतीश सिंह व संजीव शर्मा ने प्रोजेक्ट में रामकुमार कौशिक व रसूल को जिम्मेदारी दी है। दिवाली के बाद सभी संगठन कामगारों को प्रभावित करने में जुट जाएंगे। माना जा रहा है कि इस बार अधिक मेहनत कर संगठन को एक नंबर पर लाने के लिए प्रयास कार्यकर्ता मिलकर कर रहे हैं।

प्रबंधन ने वार्ता के लिए बुलाया

कोरबा। बिजली कर्मचारी संघ का अनिश्चितकालीन धरना रायपुर में जारी है। आज प्रबंधन और बिजली कर्मचारी महासंघ की बैठक होगी, जिसमें पुराने पेंशन स्कीम व संविदा के आधार पर काम कर रहे कर्मचारियों को नियमित करने के मुद्दे पर चर्चा होगी। राष्ट्रीय सचिव राधेश्याम जायसवाल, प्रदेश महामंत्री नवरतन बरेठ रायपुर रवाना हो गए हैं। जबकि अनिश्चितकालीन धरने में पूरे छत्तीसगढ़ से कार्यकर्ता पहुंच रहे हैं। सभी क्षेत्रों को अलग-अलग दिन का टाइम दिया गया है। कोरबा से भी अमर सिंह राठौर , कमल यादव, संदीप राठौर, अजय मिश्रा सहित अन्य कार्यकर्ता प्रदर्शन में शामिल होने के लिए गए हुए थे।

आदेश पर भी नहीं हटे बीआरसी गुलाब दास के खिलाफ फिर मोर्चा

विभिन्न कार्यों में रुपए मांगने की शिकायत के बाद हुई थी जांच

कोरबा। जिले के पोड़ी उपरोड़ा विकासखंड स्थित शिक्षा विभाग के बीआरसी गुलाब दास महंत को पिछले दिनों जांच के बाद हटाते हुए मूल पदस्थापना सिंघिया में काम संभालने कहा गया था। उनके हौसले इतने मजबूत हैं कि सरकारी आदेश को किनारे करते हुए वे अभी भी यहां पर जमे हुए हैं। इससे नाराज संकुल समन्वयकों ने कहा है कि अगर यही चलता रहा तो वे काम नहीं करेंगे और न ही कोई सहयोग करेंगे।

उन्होंने इस बारे में विकासखंड शिक्षा अधिकारी पोड़ी उपरोड़ा को विधिवत पत्र भेज दिया है। संकुल शैक्षिक समन्वयक संघ की ओर से इस बारे में बीईओ को पत्र लिखा गया है। इसमें अविलंब बीआरसीसी महंत को हटाने की मांग की गई। कहा गया कि सरकार ने उसे यहां से हटाने के आदेश दिए हैं लेकिन अब तक कार्यमुक्त करने में पता नहीं क्यों रूचि ली जा रही है। यार रहे 26 सितंबर को शिक्षा विभाग मंत्रालय के द्वारा एक आदेश के तहत गुलाब दास को पोड़ी उपरोड़ा से हटाते हुए मूल पदस्थापना शासकीय पूर्व माध्यमिक शाला सिंघिया के लिए पदस्थ किया गया। संगठन का कहना है कि इस आदेश का पालन अब तक नहीं कराया गया है। इस वजह से गुलाब दास की हरकतें जस की तस बनी हुई है। संगठन का कहना है कि यह स्वेच्छाचारिता के साथ-साथ मनमानी का जीता-जागता नमूना है। इससे संदेश जाता है कि बीआरसीसी जैसे लोग विभागीय अधिकारियों से कहीं ज्यादा महत्वपूर्ण हैं।

बीईओ पांडेय की जांच रिपोर्ट पर हुई थी कार्रवाई

विकासखंड पोड़ी उपरोड़ा के अनेक संकुल समन्वयकों के द्वारा पिछले महीने एक विस्तृत शिकायत जिला प्रशासन और शिक्षा अधिकारी के पास की गई थी। इसमें कहा गया था कि विभिन्न कार्यों के नाम पर बीआरसीसी को रुपए चाहिए। कभी वे सीधी मांग करते हैं तो कभी दूसरे के जरिए। रुपए नहीं मिलने पर कई कार्यों में अड़ंगा लगाने की कोशिश भी करते हैं और धमकी देते हैं। इस शिकायत पर करतला विकासखंड शिक्षा अधिकारी संदीप पांडेय ने जांच की। शिकायतकर्ताओं के बयान लिए गए। जांच प्रतिवेदन सौंपे जाने पर कार्यवाही की अनुशंसा की गई। लेकिन अब तक नतीजे सिफर हैं।

संगठन के अध्यक्ष ने कहा कि अगर गुलाब दास महंत को यहां पर ही काम करना है तो उनके साथ कोई भी संकुल समन्वयक काम नहीं कर पाएगा, क्योंकि वे वसूली से त्रस्त हो गए हैं।

26 हाथी पहुंचे मड़ई, 12 विचरण कर रहे बनिया में

कोरबा। वनमंडल कटघोरा में हाथियों का उत्पात लगातार जारी है। यहां के पसान व एतमानगर रेंज में घूम रहे हाथियों के दल ने बीती रात उत्पात मचाते हुए एक दर्जन से अधिक ग्रामीणों के खेतों में लगे धान की फसल को रौंद दिया।

जानकारी के अनुसार 26 हाथियों का दल कल तक केंदई रेंज के चोटिया क्षेत्र में विचरण कर रहा था। हाथियों के इस दल ने बीती रात आगे का रूख किया और जंगल ही जंगल होते हुए एतमानगर रेंज की सीमा में प्रवेश किया और मड़ई के पास पहुंचने के साथ ही जंगल में डेरा डाल दिया। बड़ी संख्या में हाथियों के क्षेत्र में आने की सूचना मिलते ही वन विभाग के अधिकारी व कर्मचारी मौके पर पहुंचकर हाथियों की निगरानी में जुट गए हैं। मड़ई व आसपास के गांव में मुनादी कराने के साथ ग्रामीणों को सतर्क करने का काम भी शुरू कर दिया गया है। 12 हाथियों का दल अभी भी बनिया गांव में है। हाथियों के इस दल ने बीती रात उत्पात मचाते हुए 12 ग्रामीणों के खेतों में लगे धान की फसल को रौंदा हुआ व तहस-नहस पाया। इसकी सूचना वन विभाग को दी है।

ट्रेलर पर लोड एक्सीवेटर टकराया तार से, एक की मौत

कोरबा। कोरबा जिलान्तर्गत पाली थाना क्षेत्र के ग्राम भंडारखोल के पास एक ट्रैलर में लोड एक्सीवेटर 11केवी बिजली तार के संपर्क में आ गया। करंट लगने से वाहन चालक की घटना स्थल पर मृत्यु हो गई। उक्त घटना की सूचना डॉयल 112 टीम और पाली बिजली सब स्टेशन को दी गई।

पुलिस मौके पर पहुंची और बिजली बंद कराकर ट्रैलर को तार के संपर्क से हटाया गया। मृतक की पहचान नहीं हो पाई है। फिलहाल पुलिस मामले की जांच कर रही है। पुलिस के अनुसार झुमरकछार रोड पर भंडारखोल परसापारा के पास एक्सवेटर लोड ट्रैलर सड़क से गुजर रहे 11केवी करंट प्रवाहित बिजली तार के संपर्क में आ गया। वाहन में करंट फैल गया और चालक की घटना स्थल पर ही मृत्यु हो गई। सूचना पर पुलिस मौके पर पहुंची। सुरक्षा के लिहाज से लोगों की आवाजाही को रोका गया। इसके बाद नुनेरा बांधाखार व दीपका की दमकल की टीम को मौके पर बुलाया गया। पाली सब स्टेशन से निकली 11केवी बिजली तार में आपूर्ति बंद कराकर ट्रैलर को सड़क से हटाया गया।

फ्लाई ऐश से जुड़ी समस्या ठीक नहीं कर सका एनटीपीसी

कोरबा।कटघोरा में एनटीपीसी की क्षतिपूर्ति राशि के भुगतान में हो रही देरी से नाराज ग्रामीणों ने तहसील कार्यालय के सामने धरना दिया। राखड़ प्रभावित धनरास गांव के सैकड़ों ग्रामीण, महिलाओं के साथ, स्क्रू कार्यालय पहुंचे और राजस्व विभाग के खिलाफ जमकर नारेबाजी की। ग्रामीणों का कहना है कि हस्तांतरण प्रबंधन ने एक वर्ष की क्षतिपूर्ति राशि दो महीने पहले ही राजस्व विभाग को दे दी थी। लेकिन अब तक यह राशि हितग्राहियों तक नहीं पहुंच पाई है। हर साल यह रकम ग्राम पंचायत के खाते में सीधे जमा की जाती थी, लेकिन इस बार विभाग के पास फँसी हुई है। ग्रामीणों ने दीपावली से पहले राशि जारी करने की मांग की है। उनका कहना है कि ल्योहार नजदीक है और मुआवजा न मिलने से गांव में आर्थिक संकट की स्थिति बन गई है। घरने में बड़ी संख्या में महिलाएं भी शामिल हुईं, कटघोरा स्क्रू तन्मय खन्ना से मिलकर तत्काल क्षतिपूर्ति राशि आबंटित करने की मांग रखी। स्क्रू ने ग्रामीणों को आश्वासन दिया है कि मामले की किसानों को क्षतिपूर्ति की राशि दीपावली से पहले देने की बात की।

त्योहारी सीजन में बड़ी रकम का लेनदेन करने में पर्याप्त सावधानी बरतें लोग

सराफा व पटाखा कारोबारियों की बैठक ली टीआई तिवारी ने

कोरबा। धनतेरस, दीपावली एवं छठ पूजा पर्व को ध्यान में रखते हुए कटघोरा थाना परिसर में एक महत्वपूर्ण बैठक आयोजित की गई। बैठक की अध्यक्षता थाना प्रभारी धर्म नारायण तिवारी ने की। सराफा व्यापारियों एवं पटाखा दुकान संचालकों को आवश्यक निर्देश देने के साथ लोगों से कहा गया कि अगर वे बड़ी रकम का लेनदेन कर रहे हैं तो इस दौरान बिल्कुल चौकने रहे।

बैठक में थाना प्रभारी तिवारी ने त्योहारों के दौरान बढ़ती व्यापारिक गतिविधियों को देखते हुए सुरक्षा व्यवस्था को लेकर कई महत्वपूर्ण निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि त्योहारों में भीड़भाड़ और आर्थिक लेन-देन बढ़ने के कारण अपराधियों की सक्रियता की संभावना भी बढ़ जाती है, ऐसे में सभी व्यापारियों को सतर्कता और सावधानी बरतनी होगी। सभी दुकान संचालक अपनी दुकानों में सीसीटीव कैमरे अनिवार्य रूप से चालू रखें और उसकी डीवीआर सिस्टम की जांच समय-समय पर करते रहें। ग्राहकों की संदिग्ध गतिविधियों पर सतर्क निगाह रखें और किसी भी संदिग्ध व्यक्ति या परिस्थिति की जानकारी तुरंत पुलिस को दें। भारी रकम का लेन-देन सावधानीपूर्वक करें और यथासंभव डिजिटल भुगतान का उपयोग बढ़ाएं। दुकान बंद करते समय ताले, शटर और सुरक्षा उपकरणों की जांच अवश्य करें। पटाखा दुकानदारों को सुरक्षा मानकों का पालन अनिवार्य रूप से करने के निर्देश दिए गए, ताकि कोई भी दुर्घटना न घटे। किसी भी आपात स्थिति या संदिग्ध गतिविधि की जानकारी 112 या कटघोरा थाना पुलिस को तुरंत दें। थाना प्रभारी तिवारी ने कहा कि पुलिस बल द्वारा ल्योहारों के दौरान विशेष गश्त एवं निगरानी बढ़ाई जाएगी, ताकि नागरिक बिना किसी भय के शांतिपूर्ण ढंग से ल्योहार मना सकें।

108 एम्बुलेंस में महिला ने दिया बच्चे को जन्म

कोरबा। जिले के लेमरू क्षेत्र में प्रसव पीड़ा से जूझ रही एक महिला ने जिला मेडिकल कॉलेज अस्पताल ले जाते समय 108 एम्बुलेंस में बच्चे को जन्म दिया। ईएमटी (आपातकालीन चिकित्सा तकनीशियन) और परिजनों की मदद से हुए इस प्रसव के बाद मां और नवजात दोनों स्वस्थ हैं। यह घटना लेमरू से लगभग 25 किलोमीटर दूर ग्राम गढ़कटरा मेन रोड की है।

जानकारी के अनुसार लेमरू निवासी राजेंद्र कुमार की 30 वर्षीय पत्नी नईहारो बाई को प्रसव पीड़ा शुरू हुई। परिजनों ने तत्काल 108 एम्बुलेंस को सूचना दी। एम्बुलेंस मौके पर पहुंची और नईहारो बाई को लेकर जिला मेडिकल कॉलेज अस्पताल के लिए रवाना हुई। रास्ते में ग्राम गढ़कटरा मेन रोड पर नईहारो बाई का दर्द अचानक बढ़ गया। एम्बुलेंस में मौजूद ईएमटी रामेश्वरी कंवर और ड्राइवर कोमल ने वाहन को किनारे रोका। उन्होंने परिजनों के सहयोग से एम्बुलेंस के भीतर ही सुरक्षित प्रसव कराया। नईहारो बाई ने एक स्वस्थ लड़के को जन्म दिया। सफल प्रसव के बाद मां और नवजात को जिला मेडिकल कॉलेज अस्पताल में भर्ती कराया गया, जहां उनका उपचार जारी है। परिजनों ने बताया कि यह उनका तीसरा बच्चा है। इससे पहले उनके एक लड़का और एक लड़की हैं। परिजनों ने इस आपातकालीन स्थिति में मदद करने के लिए ईएमटी रामेश्वरी कंवर और चालक कोमल का आभार व्यक्त किया। ईएमटी रामेश्वरी कंवर ने बताया कि प्रसूता की हालत ऐसी थी कि उसे जिला मेडिकल कॉलेज तक ले जाना मुश्किल हो रहा था। परिजनों की सहमति से रास्ते में ही प्रसव कराने का निर्णय लिया गया।

बीएमएस को मिली जीत

कोरबा। एनटीपीसी कोरबा में बुधवार को मान्यता के लिए हुए श्रमिक संघ चुनाव में भारतीय मजदूर संघ ने बाजी मारते हुए जीत हासिल की है। इंटक एवं भारतीय मजदूर संघ (बीएमएस) के मध्य सीधा मुकाबला हुआ। ईवीएम के माध्यम से प्रगति क्लब एनटीपीसी में मतदान किया गया। सर्वाधिक वोट लेकर बीएमएस ने मान्यता हासिल कर ली है। प्रतिनिधि यूनियन के लिए बी एम एस एवं इंटक के बीच चुनाव संपन्न हुआ। जिसमें कर्मचारियों ने बीएमएस को अपना पसंदीदा श्रम संघ के रूप में चुना। मतदान में 146 कर्मचारियों ने भाग लिया, जिसमें बीएमएस को 79 एवं इंटक को 67 वोट मिले थे। बीएमएस ने 12 वोट से जीत हासिल की। बीएमएस से सम्बद्ध भारतीय ताप विद्युत मजदूर संघ के अध्यक्ष सुरेन्द्र कुमार राठौर एवं महामंत्री महेंद्र ठाकुर ने बताया कि यह चुनाव 03 वर्ष के लिए होता है, जिसके लिए चुनाव शांतिपूर्ण माहौल में मतदान, मतगणना एवं परिणाम के साथ प्रक्रिया पूर्ण की।

हरी झंडी दिखाकर कॉन्टिनुस माइनर को किया रवाना

कोरबा। 16 अक्टूबर को प्रातः 10.30 बजे राजेश कुमार गुप्ता, क्षेत्रीय महाप्रबंधक, के द्वारा कॉन्टिन्युस माइनर को हरी झंडी दिखाकर रवगामार उपक्षेत्र की 6×7 खदान मे कोयला उत्पादन के लिए रवाना किया गया। इस कार्यक्रम मे श्री गुप्ता के साथ उद्यनाथ झा, महाप्रबधक(संचालन), थिरुकुमारन स्टाफ अधिकारी, पिनाकी शाह, प्रोजेक्ट मैनेजर, गैनवेल कंपनी, अधिकारी एवं कर्मचारियो की गरिमामयी उपस्थिति मे मशीनों का विधिवत पुजा-अर्चना की गई। तत्पश्चात महाप्रबंधक के द्वारा सभी को शुभकामनाओ के साथ कोरबा क्षेत्र के द्वारा कोयला उत्पादन का लक्ष्य हासिल करने हेतु प्रोत्साहित किया गया।

लेमरू और अन्य क्षेत्रों में ग्रामीणों के साथ दीपावली की बांटी खुशियां

कोरबा। आसाराम बापू की प्रेरणा से महिला उत्थान मण्डल, युवा सेवा संघ एवं योग वेदांत सेवा समिति कोरबा के संयुक्त तत्वाधान में बुधवार दिनांक 15 अक्टूबर को कार्तिक अमावस्या निमित्त दीपावली सेवा कार्य का आयोजन किया गया, इस आयोजन में सेवा और सद्भावना का अद्भुत संगम देखने को मिला।

आसाराम के शिष्यों ने कोरबा के सुदूर वनांचल क्षेत्र लेमरू के आदिवासी परिवारों के बीच पहुंचकर दीपावली के पावन अवसर हेतु दीया-बाती-तेल, मिठाई, पटाखे, जीवनोपयोगी वस्तुओं का वितरण किया। कार्यक्रम की रौनक तब और बढ़ गई जब कीर्तन की धुन पर लोग करताल के साथ झूमने लगे। युवा सेवा संघ कोरबा के प्रमुख कौशलेंद्र सिंह ने बताया कि संत आसाराम की प्रेरणा से देश-विदेश स्थित लगभग 450 से अधिक आश्रमों और लगभग 1400 समितियां प्रतिवर्ष दीपावली में विभिन्न सेवा कार्य करते हैं। यहां पर उल्लेखनीय है कि महिला उत्थान मंडल और युवा सेवा संघ कोरबा द्वारा प्रतिमास की अमावस्या को सेवा कार्य चलाए जाते हैं। इसी तारतम्य में गत वर्ष कार्तिक मास की अमावस्या से प्रारंभ सेवा की। इस वर्ष भी दीपावली सेवा कार्यक्रम चलाया गया, जिसका लाभ अनेक लोगों ने लिया।

कार्यक्रम में मुख्य रूप से ममता देवांगन, रीता जगवानी, अनीता गुप्ता, लालिमा सिन्हा, प्रमिला साहू, संजू टंडन, खम्मन लाल साहू, धनेश देवांगन, रामगोविन्द देवांगन, लोकचंद सिन्हा, मनीराम पटेल, अनिल पटेल, नारायण देवांगन, राजनाथ साहू सहित अन्य कई सेवाधारियों का योगदान था, जिन्होंने कार्यक्रम को सफल बनाया।

पटाखा मार्केट में नियमों की धज्जियां उड़ी

कोरबा। स्टेडियम के बाहरी हिस्से में पटाखा बाजार लग गई है। 145 दुकानें लग गई हैं। बताया गया कि करोड़ों का निवेश कारोबारियों ने किया है। प्रशासन ने पटाखा मार्केट के लिए जो गाइड लाइन जारी की है उसकी धज्जियां यहां पर उड़ती हुई नजर आ रही है। सुरक्षा संसाधनों के नाम पर जमकर लीपापोती की गई है। यही हाल कटघोरा में है।

शारदा विहार में सियान सदन के लोकार्पण से पहले आसपास में अतिक्रमण

कोरबा। नगर निगम ने कोरबा के शारदा विहार वार्ड क्रमांक 23 में मुख्य मार्ग पर 10 लाख रुपए खर्च कर सियान सदन का निर्माण कराया है। इसका लोकार्पण होना अभी बाकी है और इसके पहले ही भवन के आसपास अतिक्रमण की बाढ़ आ गई है। नगर निगम ने इस पर फिलहाल ध्यान देना जरूरी नहीं समझा है, ताकि और भी लोगों का हौसला बढ़े।

रेलवे क्रासिंग से पहले एटीएम के नजदीक नगर निगम के द्वारा वरिष्ठ नागरिकों के उपयोग के लिए सियान सदन का निर्माण कराया गया है। पिछले वर्षों में इसकी मांग सामने आई थी। विकल्प के अभाव में यहां के 65 प्लस वाले लोग इसी मार्ग पर स्थित दुर्गा पूजा पंडाल का उपयोग करते हैं। समय के साथ बढ़ रही संख्या के आधार पर उन्होंने सियान सदन मांगा जिसे स्वीकृत कर लिया गया। आगामी दिनों में इसका लोकार्पण होना है। इसकी प्राथमिक तैयारियां कर ली गई हैं। इससे पहले ही सियान सदन भवन के आसपास ठेले-टपरे और टेंट लग गए हैं। लोगों ने प्रचारित करना भी शुरू कर दिया है कि यह जमीन हमारी है और इसका पट्टा लेने भी प्रयास किए जाएंगे।

स्वामी कौशल किशोर मिश्र की ओर से प्रकाशक, मुद्रक सुभाष अग्रवाल द्वारा आकाश आफसेट प्रिंटर्स से मुद्रित कर तिलक मार्ग, ट्रांसपोर्ट नगर, कोरबा से प्रकाशित, संपादक सुभाष अग्रवाल फोन: 221149, मो. : 9425224167 आर.एन.आई. पंजी. नं. 50254/89, ई-मेल tarunpresskrb@gmail.com